SUPER
DE-LUX

apollo

100

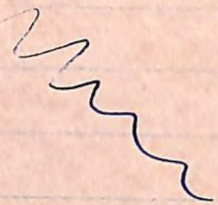

In continuation of Book I.
Copy Book no II.

—VV—

योग वासिष्ठ सार.
Yogavasishtha Sara.

with
Translations
in
1) Hindi
2) Kashmiri.
and 3) English.

——————VVV——————

Wadoo
29.11.73.

English :-

It is only on our admission of the fact, that this body of ours, is nothing more than a a log of wood or a lump of earth, which enables us to understand the nature of the Supreme Lord — परमात्मा ।

~~Book VIII~~ chapter XII. cont'd.

१३) एतावतैव देवेशः परमात्माऽवगम्यते ।
काष्ठ-लोष्ठ-इयत्वेन देहो यत् अवगम्यते ॥

हिन्दी

इसी/एक साधारण बात से, यह परब्रह्म परमात्मा की पहचान हो जाती है, कि हम इस देह को काष्ठ और मिट्टी के अतिरिक्त और कुछ न जान पाएं ।

कश्मीरी

यीचि अकि स्वचि सून्य, गछि अहि भगवानु-
तुन्दसरूप मालुम, छि अहि छु सिरिफ थूतुय
स्वयाल यवुन ज़ि छि इसीर छनु हुचि तु म्यचि
काठु
कानैर व्यचि केंह ।

English :

It is only our full admission of the fact, that this body of ours, is nothing more than a log of wood or a lump of Earth, that enables us to understand the nature of the supreme Lord - Brahman or Atman.

(१४) अहो बत चित्रं यत् सत्यं ब्रह्म तत् विस्मृतं मृषाऽसत्यं अविद्याख्यं तत् पुरः परिवर्धते ॥

हिन्दी

आश्चर्य है कि वह ब्रह्म, जो सत्य है, उस को लोग भूल गए हैं। और जो असत्य है, जिस को लोग अविद्या के नाम से भी जानते हैं, उसे लोग सत्य समझने लगे हैं।

कश्मीरी — कोतह आश्चर्य छु, जि युस ब्रह्म छु, सु छुय तूकव म्यारावित्थ, युस यि असत्य ज़गत् छु, यथ अविद्या ति नाव छु, तथ हुंच अति मूर्खिव अपुथफ करुन्य।

English :-

What a wonder! The only Truth, which is Brahman, is being neglected by the people, and the untruth, which is called अविद्या also, is being brought into forefront ~~importance~~, and as such, is being allowed to grow into magnitude unnecessarily.

24)

English :-

Yet there is another wonder (which we confront in our daily life) — we have neglected to attain that Summum Bonum, the Supreme Lord, which alone should be our goal. On the other hand, we adhere ~~ourselves~~ to अविद्या i.e. to a wrong notion called 'मम इदं' (this is mine), which (notion) gathers strength day by day.

X

(25) अन्यत् चित्रं यत् परमं ब्रह्म, तत् विस्मृतं जनैः ॥
यत् 'मम-इदं' अविद्यारूपं तत् पुरः प्रबलायते ॥

हिन्दी।

और भी एक आश्चर्य है, जो उत्कृष्ट वस्तु अर्थात् परब्रह्म है, उस को अज्ञानी लोग भूल बैठे हैं। और जो यह "मेरा यह है" वाला झूठा अविद्यारूप संकल्प है, वही लोगों की नज़रों में ज़ोर पकड़ता जा रहा है।

कश्मीरी

दयमि त्रु छु यि अरव आश्चर्य, ज़ि युस परमु ब्रह्म छु, सु म'रारेव अहि अज्ञानियव। दयमि युस- "यि छु म्योन" अमि प्रकारक युस अछुज़ अविद्यारूप संकल्प छु, सुय छु दोह-पत-दोह लूकन हंज़ि नज़रि मंज़ ज़ोर रटान गछान।

English :-

Yet there is another wonder :— the supreme most desired object i.e. Brahman, is being neglected by the people. On the other hand, they get strongly inclined to अविद्या (i.e. a wrong kind of notion i.e. to say that "this is mine") which also gathers strength day by day.

६६) सर्वं ब्रह्मेति यस्यान्तर् भावना, सा विमुक्तिदा।
भेदबुद्धिरविद्येयं सर्वथा तां परित्यज ॥

हिन्दी

जिस के मन में - 'सर्वं ब्रह्म' (यह सारा जगत् ब्रह्म का ही रूप है - विलास है) - इस प्रकार की भावना है, वह/उस भावना को अवश्य मुक्ति प्रदान करेगी। यह जो अविद्या है, उस को, तुम, ~~भेद बुद्धि सर्वथा छोड़~~, सब प्रकार से, छोड़ने की कोशिश करो ॥

भेद बुद्धि भेद करने वाली

उर्दू।

वो'अस सो'दिह मनह मंज़ कि भावना आहि, जि कि होकिय ज़रूर छु ब्रह्म-मुन्दुय स्वरूप, हुय भावना छिह तो'मिह मुक्ति दिवान। यहु कि/अविद्या छिह, हु ~~यहु छह~~ भेद-बुद्धि उत्पन्न करनजन्य, ~~भेद-बुद्धि, तु~~, हर प्रकारु किन्य, त्रो'विध छुनुन्य।
~~छुनुन्य कोशिश करुन्य।~~

"That, 'all this is Brahman' - such meaning conviction in us, will bring about our salvation. On the other hand, the अविद्या (ignorance) causing dualistic notion in us, ~~it~~ should, ~~therefore~~, be shunned, in every respect.

8) If you, (who are really of the nature of Brahman), succeed in dissociating your body from jīvātman, (and after having done so), stay for a little while for rest, on the plane of consciousness (சித்), for a few moments, then you will instantly begin to feel that you have grasped the real happiness & that besides being composed, you will see yourself released from the bondage of life.

8) If you (who are really of the nature of Brahman) succeed in dissociating your body from Jīvātman, (and after your having succeeded therein) you stay for a while for rest in consciousness (சித்), then & there you will begin to realise that you have grasped the highest felicity and besides having become composed, you have found yourself released from the bondage of life.

X

Chapter VIII.

आत्मा चित — the proprietor of Ātman). 146

वसिष्ठ उवाच — vasishtha said:-

१) यदि देहं पृथक्-कृत्य चिति विश्रम्य तिष्ठसि।
अधुनैव सुखी शान्तो मुक्तबन्धो भविष्यसि॥

हिन्दी
का विचार छोड़कर

यदि देह को अलग करके, अपने चित्-स्वरूप आत्मा
में प्रवेश करके, वहां, कुछ क्षण विश्राम करोगे, तो उसी
क्षण, तुम्हें यह महसूस होगा, कि तुम्हें अपूर्व सुख-शान्ति
प्राप्त हुई है और तुम संसार के बन्धनों से मुक्त हो॥

कश्मीरी
जीवात्मा

यदि, यि शरीर आत्मा निशि अलग कैडिय, पत
मनिह चैतन्यरूपस मंज़ प्रवेश कैरेथ, तथि, केंह कालो
आराम, अस्तु रवंत्र ठहरव, त्यथि, तमी क्यंह सपदी चेह
यि मालूम कि चेह कुस भाव अपूर्व सुख प्राप्त
हयुंद्य तुल तु क्यथि सुख, संसारकय पाशन निशि ति
मुक्त होयुस, तु आज़ाद होयुस।

(ज्ञान नांछिय)

१) If you who are of the nature of Atman, succeed in disaggregating your body from your जीवात्मा and after that चित् (consciousness) and others on the plane of consciousness for some moments to take rest, then you will instantly begin to feel that you have found out instantaneous happiness that you are composed and released from bondage,

2)

Having realised that inspiring Power, inherent within you, which helps you to understand the nature of this world, you may try to turn your mind inwards under a yogic exercise.

Then you are sure to see clearly yourself flooded all over, with Divine Effulgence.

2) येनेदं वेत्सि तत् ज्ञात्वा कुरु प्रत्यङ्-मुखं मनः।
ततः प्रकाशरूपत्वं द्रक्ष्यसि स्फुटं आत्मनः॥

हिन्दी

जिस की प्रेरणा से तुम इस जगत् को जान सकते हो, उसी को पहचान ~~कर~~ के लिए अपने मन को अन्तर्मुख करो, फिर तुम अपनी आत्मा को प्रकाशरूप ~~में~~ देख पाओगे।

कश्मीरी

यंय हेंज़ि प्रेरणाय किन्य ~~जेनित सक्षिय~~, छुख चु यि ज़ात् पहचानन, सुय पहचानुन ठीक पठिन तु ~~पनु कर~~ पनुन मन अंतर्मुख (काहिय) तमी अनु वुछख (अद्) चु पनुन पान ~~प्रकट स्वरूपिन्य~~ (ट्ठकार-पाठेय) थौ लवुन तु चमकुवुन।

Key to know that internal (power) which makes you to perceive this world. ~~After realising that you should having known that~~ (To) turn your mind ~~inside~~ (wash). Then you will clearly see your self radiating with divin light.

३) येन शब्दं रसं रूपं गन्धं जानाहि राघव!
तं आत्मानं परं ब्रह्म जानीहि परमेश्वरम् ॥

हिन्दी

जिस आत्मदेव की प्रेरणा से तुम, रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श को जान सकते हो, उसी को ब्रह्म और परमेश्वर ~~से अभिन्न~~ समझ लेना।

मराठी

ज्या'जिस आत्मदेव-हे'ज्या प्रेरणाधिष्ठित्य तू ध्रुव जाणिशी ह्याकरिता शब्द, स्पर्श, रस, रूप तु गन्ध, हे राघव आत्मा, ज्ञानुन ब्रह्मरूप तु परमेश्वर ॥

English.

O Rāghava! ~~the~~ Atman, with whose helps you make ~~that consciousness~~ understand sound, touch, taste, form and smell, know him as the Supreme Brahman or the परमेश्वर, the Great Lord of the Universe.

8)

The Supreem Power, wherein the totality
of the Padarthas Sinks & disappears and
whereby, O Rāma!, ~~this~~ it comes to manifestation,
know that as the Paramatman, of the
very nature of your own Self.

४) यत्र भावा विलीयन्ते विस्पन्दन्ते च येऽमी वै।
तमेकात्मानं आत्मनोरूपं जानीहि राघव ॥

हिन्दी

जिस आत्मरूप में यह पदार्थ विलीन होजाते हैं और जिस के द्वारा यह स्पन्दन को प्राप्त होते हैं, उसी को, हे राम, परमात्मा का रूप जान लो।

कश्मीरी

यथ आत्म स्वरूपस मंज, यिम सांरी पदार्थ मंलिय यिम सांरी
ग्यान छि, बयथि मंजि कल-सूत्य, छि/सारी
पदार्थ, हरकस कंरिय ह्यकान; हे रामु! तुय जानुन
छि परमात्मस हुन्द लि रूप ॥
तु परमात्मा, युस योनुय रूप छु

Supreme
The/Power, wherein the totality of
पदार्थ sinks and disappears, and whence-
ever they come to manifestation/existence, know
O Raghava! the Paramatman as your very self, of the
The/Atman as your own Atman.
very nature of

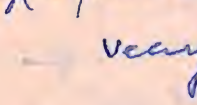

५) यत् यत् ज्ञेयं इदं नश्वं
नेति नेत्यज्ञ युक्तिभिः ।
कृत्वावधिष्ठ चिन्मात्रं ज्ञेऽस्मि ज्ञेऽस्मीति भावय ॥

हिन्दी

५) इस दृश्य में जो कुछ भी ज्ञेय पदार्थ हैं, उन सब को तर्कद्वारा, क्रमपूर्वक, अनात्मरूप प्रमाणित करते हुए, अन्त में, जिस किसी अवशिष्ट पदार्थ पर आकर, उसे किसी भी उस को अनात्मरूप सिद्ध नहीं कर पाओगे, तो उसी को चिन्मात्र समझ लो, और 'मैं वही हूं' 'मैं वही हूं' यही दृढ़ भावना करलो ।

कश्मीरी

यथ हंदरह मंज़, जिन सारी ज्ञेय पदार्थ छि, तिथन तारिनुय, तर्कीकिन, क्रमपूर्वक अनात्मरूप सिद्ध करान करान, अन्तस् च्यठ, यथ अवशिष्ठ पदार्थस च्यठ वा'तिथ, तथ छिन, अनात्मरूप सिद्ध करिथ छुकान, तुय गछि तुमकुन चिन्मात्र; त'थ च्यठ गछि दृढ़ भावन यातुन्य ज़ि 'अहं छुस्म्' 'अहं छुस्म्' अहोयचिन्मात्र

English :-

After hammering out, by cogent reasoning the un-Atmic nature of the world's objects, and, Therefore, when you conclude to discard them one by one, but in this process of discarding when you arrive at that final object which you hesitate to discard, that is the 'chinmatra'. stick to it & say: I am this, I am this chinmātra alone.

६) ब्रह्मविष्णुशिवेन्द्राद्याः यत् यत् कुर्वन्ति सर्वतः।
तदहं चिद्वपुः सर्वं करोमीत्येव भावय ॥

हिन्दी

निश्चयपूर्वक मान लो
तुम यह ~~विश्वास करो~~ कि मैं केवल संवित्-स्वरूप हूं। और इसी दृढ़भावना से सन्नद्ध होकर यही मान लो कि मैं ही वह सब कुछ करता हूं जो ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र आदि कर रहे हैं।

कश्मीरी

तुइ मानुन पनुन ज्ञान केवल संवित्-स्वरूप;
व्यापि अव, यहेवय निश्चय कि बह छुस तीनी
हेरुनय करान यि यि ब्रह्मा, विष्णु, शिव तु इन्द्र
आदि २ करान छि।

Imagine
/You be convinced of the fact, that you
constitute pure consciousness alone, and you
are capable of performing all those functions,
which Brahmā, Vishnu, Shiva, Indra etc. etc.
execute in the Universe.

But
This p
of disc
others
reach
him

b) ✻ English :-

As knowledge, knower, and the knowable are all interlinked together and as such they cannot maintain their separate existence, it is, therefore, concluded that duality has not no substantial standing whatsoever.

७) ज्ञानं न भवतो भिन्नं ज्ञेयं ज्ञानात् पृथक् नहि ।
अतो न त्रितयात् किंचित् तस्मात् भेदो न विद्यते ॥

हिन्दी

ज्ञान, ~~ज्ञाता~~ ज्ञातृत्व तुम से भिन्न नहीं; ज्ञेय जो है, वह ज्ञान से पृथक् नहीं; इस के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। इस लिए जो कुछ भेद-भावना है वह असत्य है ।।

कश्मीरी

ज्ञान छनु ज्ञेह / ज्ञानन वा'लिस निशि भिन्न । यि ज्ञानुन छु, तु छुनु ज्ञा'न्य निशि अलग । यिमव अलगु छु नु क्यमि कॉंह नीज़ । अमि किन्य छनु कॉंह ति भेद-भावना, अमार कॉंह छह, छह छह अमुज़ ।

∴ As, Knowledge, Knower, and the knowable are all ~~interlinked~~ with one another and cannot maintain their seperate existance. It is ~~therefore concluded that Duality cannot sustain itself in our thinking. There is no room for duality whatsoever to come in. does not exist.~~ has no Existence whatsoever.

८) अहं सर्वं इदं विश्वं परमात्माऽहं अव्ययः ।
न मृतं अस्ति मे भवि तस्मात् भेदो न वास्तवः ।।

हिन्दी

यह सारा विश्व मेरा ही आत्मरूप है । मैं अनश्वर परमात्मा हूं । न मेरे लिए अतीत या भविष्य है । अतः यह सारी भेद/भावना मिथ्या है ।

कश्मीरी ।

यि तोकम संसार छु भोगुय आत्म-रूप ।
बय छुस परमात्मा, नित्य नु सनातन ।
दुन, भविष्यत् नु वर्तमानु/कि असेर छु नु म्येह केंह ।
अभिकित्य, युस यि भेद भावना छु, सु छु
सरासर भ्रम नु मिथ्या ।

I constitute all this Universe. I am of the nature of Supreme Lord, Eternal & undecaying. Past, present and future do not concern me. So this duality has no real standing whatsoever.

५) एकं ब्रह्म चिदाकारं सर्वात्मकं अखण्डितम् ।
निष्कम्पं भूरि वाऽशेषं - इति भावय यत्नतः ॥

हिन्दी

दृढ निश्चयपूर्वक यही भावना धारण करो कि ब्रह्म एक अर्थात् अद्वितीय है, जो चित्-स्वरूप, सर्वपूर्ण और सब में समाया है। जो अटल, भूरि अर्थात् बहु, और अशेष अर्थात् पूर्ण है।

कश्मीरी

निश्चय सान गोज़ यंञ्य अंकस्य कयि च्यठ डटिय - कि ब्रह्म छु कुन्नुय, चित्-स्वरूप, सर्वपूर्ण तु सार्वभौम मंज़ समोमुत; तमिय छु अटल तु हयठा तु शेषरहित ।

There is One Brahman alone, of the form of consciousness, all-pervading and perfect. He is steady and whole and many. He is without remainder. You may meditate on him assiduously.

१०) नाऽहं न चाऽन्यत् काऽप्यस्ति, ब्रह्मैवास्ति निरन्तरम् ।
आनन्दपूर्णं सर्वत्रैत्यऽनुद्वेगात् उपास्यताम् ॥

हिन्दी

न मैं हूं, न कोई अन्य वस्तु है । केवल आनन्दरूप ब्रह्म ही, सब जगह, परिपूर्ण-रूप से व्याप्त है । इसलिए, उद्वेग रहित होकर, उसी की उपासना करो ।

कश्मीरी

न छुस वह, न छु त्यमि कोंह चीज़ यथ जगत हंज़ यथ च्यठ अंस्त्य थंज़ नज़र आवव ; ब्रह्मुय छु पूरुपंठय हमेरि नुय जायन न्यांपिथ । सु छु पूर्ण-आनन्द-घन । अमि किन्य चज़ि अहि तेंम्य संज़ुय उपासना करुन्य ।

neither do I exist really, nor does any other thing subsist actually in this world. It is Brahman alone, who exists eternally in a blissful state, Everywhere. Let us, therefore, with a composed mind propitiate Him.

२४) ग्राह्य-ग्राहक-संबन्धे साम्यस्ये सर्वदेहिनाम् ।
यौगिनः सावधानत्वं भवेत् तत् अर्चनं आत्मनः ॥

हिन्दी ।

यद्यपि सारे देहधारियों की दृष्टि में ज्ञाता और ज्ञेय में एक साधारण सा संबन्ध है, परन्तु योगीजनों की दृष्टि में उस संबन्ध में जो एक निकली सावधानता जन्मी रहती है, उसी को आत्मार्चन के नाम से जाना जाता है ॥

कन्नड़ी ।

आकर्षित, सामान्य लौकिक दृष्टि नज़र मंज़, ज्ञाता मत्तु ज्ञेयद मंज़ अन्य सामान्य संबन्ध ज्ञानुत्तिरुत्तदे । लेकिन योगीजनर दृष्टि नज़रि मंज़ (अन्य से संबंधद मंज़ ग्रहिसुव अथवा अंजीव किंचित्तव्य सावधानता दिं जनिसुव आचरण, तन्नय दिं दोरुव आत्मदेव सेंज़ अर्चना नु पूजा ।

English :-

The attention of the people regarding the relation of the 'known' & the 'known' is generally supposed to be a cursory one. But the undivided attention with which the Yogis look at that relation, is called the real worship of Atman (आत्मार्चन) ।

Chapter IX.

(The nature of the self).

वसिष्ठ उवाच :- ——— VV ——— says Vasishtha.

२) अस्मिन् देहेन्द्रियादीनां संघाते स्फुरति स्वतः।
अयं सोऽहं-इति भवः, स जीवो मलशुण्ठितः॥

हिन्दी :-

देह, इन्द्रिय आदि के संघातरूप इस मनुष्य शरीर के विषय पर, जिस में स्वयं प्रकृति द्वारा चैतन्य और स्फुरणशीलता प्राप्त होती है, जिस मुख्य चेतनकण में, 'यह शरीर मैं ही हूं' वाला भाव उत्पन्न होता है, उसी को जीव के नाम से जाना जाता है।

कश्मीरी :-

देह, इन्द्रिय, आदिकिस संघातरूप यथ शरीरस मठ, यथ खुद-ब-खुद जुव अंदर हरकत दिह्यान नछुन्य, यंमिस मुख्य जीवन-कणस, "अहं छुस सोऽय" अमि प्रकारुक खयाल छु पैदु सपदान, नंम्यसुय, अलन कुन्द फरन भावुनिस, हे 'जीव' नावान।

English :-

That life-cell, which, in course of associating itself with this mass of देह, its organs, sense etc. etc., called human body, somehow begins to entertain the idea that I am the same body (अयं सोऽहं), is known as Jiva dressed in impurities (मल).

२) सर्वमेव चिदाकारं ब्रह्मेति घननिश्चये ।
स्थितिं याते, शमं याति जीवो निःस्नेहदीपवत् ॥

हिन्दी

"यह सारा विश्व, चैतन्यस्वरूप ब्रह्म के सिवा और कुछ नहीं है"—
इस प्रकार का निश्चय, जब दृढतापूर्वक स्थिर हो जाए, तो जीव-
ज्वलनशील वस्तु का अज्ञान स्वयं मिट जाता है, उस दीप की
तरह, जो तेल के समाप्त होने पर, स्वयं बुझ जाता है ।

कन्नडी

"नि लोकद विश्व, चैतन्यरूप ब्रह्मद सिवा कुरु ~~आधि~~ केंह,"—
मुख्य निश्चय यदि दृढतादि-ज्ञान इरद गडि, नन्दलि जु जीव
ति अंथद दृढ निश्चयद मेंज तिरि-पोंदद गॅलिद गुणान नु बेंजुत्त
हु दिवान, दिवा-पोंदद तैलवू ~~कुरु~~ सुरुत्त नंदिद्दरे, ~~कुरु~~ ज्वलन गॅडिद, बेंजुत्त
कुरु दिवान, नि कुंत गन ।

When this kind of strong conviction — that "all
this universe, is of the nature of Consciousness Itself,"
has firmly taken root within you, the jiva
gets extinguished, like an oil-less lamp.

३) तद्वदेवं यथोपेक्ष्य कश्चित् विप्रो दुरीहया ।
अङ्गीकरोति शूद्रत्वं तथा जीवत्वं ईश्वरः ॥

हिन्दी

जिस प्रकार कोई ब्राह्मण, किसी अनुचित इच्छा के कारण ~~के वशीभूत होजाने से~~, अपने श्रेष्ठ सामाजिक स्तर की उपेक्षा करके, शूद्रत्व को स्वीकार करता है, उसी प्रकार ईश्वर भी माया के वश में पड कर, जीवभाव को अंगीकार करता है ।

कश्मीरी

यिव-पांठय, कांह ब्राह्मुन, कुनि नाकार इच्छामि ~~स्वेस्सल~~ किन्य, यनुन ब्राह्मण-भाव ~~होंज~~ त्रोविथ, शूद्र बनि, तिथय-पांठय, हुं, ईश्वर ति, मायामि मंज़ फंसिथ, जीवभाव स्वीकर करान।

Just as a high caste Brahmana, ignoring his high social position, ~~gets~~ tempted to become a Śūdra, due to some unholy desire, so the Īśhwara, coming under the influence of māyā, ~~is made to~~ accepts the state of limited self.

४) असत्यं एव संकल्प्य प्रेतेदं शरीरकम् ।
जीवः पश्यति मूढात्मा बालो यक्षं इवोत्थितम् ॥

हिन्दी

जिस प्रकार, कोई अल्पबुद्धि बालक, अपने संकल्पों से उत्पन्न किए हुए एक खयाली भूत को अपने सामने खड़ा देखता है और उसे सत्यवत् मानने लगता है, उसी प्रकार यह मूर्ख जीव इस असत्य शरीर को भ्रम-वश सत्यवत् समझता है ।

कश्मीरी

यिथ छांह कोह बेकूफ बालुक, अंकिस खयाली
भूतस पुज़ मांनिथ, पानस ब्रोणकनि ज़ान / खड़ा लेकुन
तिथय छांह / यि मूर्ख-जीव हि यथ अपाज़स शरीरस,
भ्रमवश, पुज़ ज़ान मानान ।

Just as an unintelligent boy, looks at a ghost, rising before him, whom he has conjured up out of his own imagination, and for some time, takes him to be as if it were real, so this jiva, under delusion, looks at his assumed and even unbody, as if it were a really substantial thing.

४) मृत्स्नेभके यथेभत्वं सिद्धदृश्यस्य वल्गति ।
अध्यस्याऽऽत्मनि देहादीन् मूढस्तत् विचेष्टते ॥

हिन्दी

जैसे एक छोटा बच्चा, मिट्टी के (खिलौने) हाथी को, वास्तविक हाथी समझ कर, हर्ष से नाचना आरंभ करता है; उसी तरह, यह मूर्ख जीव देहादि को आत्मा समझता हुआ, अनेक प्रकार की चेष्टाएं करता है ।

कन्नडी

मिथ्य पांच्य, अरव ज्ञानुक, व्यक्ति इन्दिस्त खिलोनु-
इंतिस्त पुज्ज हुल्ल मांनिप्य, नज्जुन हुवान छ, तिथ्य पांच्य
मि मूर्ख जीवनि, देहस्त नु देहक्कन मंत्तन वंत्तन,
चंच्य पांच्य आत्मन- हुल्लु तिरुप्य मांनिप्य, छ हुवकन
नज्जुन नु व्यक्ति नमन कानि स्वभावक्कनुचि इरुवंच्य।

Just as a child, ~~dances, with joy~~ on seeing a toy Elephant made of ~~Earth~~ clay, dances with joy, for, he takes it for a real Elephant), Similarly, a foolish person, considering, under delusion, his body as ~~as~~ real as Atman, begins to act in manifold ways.

६) चित्रसर्पः परिज्ञातो न सर्पभयदो भवेत्।
जीवसर्पः परिज्ञातः तथा न सुखदुःखदः॥

हिन्दी

जब यह बात हमें ज्ञात होजाए कि यह सत्य सांप नहीं बल्कि एक तस्वीर पर अंकित की हुई सांप की प्राकृति है, तो हमें सांप के डसने का डर नहीं रहता। इसी तरह जीवसर्प को चित्रसर्प के समान असत्य जान कर, हमें उस के विषय में सुख-दुख की चिन्ता करना व्यर्थ है।

कन्नडी।

यदि अंकित तस्वीरिन पट चित्रित ~~कर्मसुनिस~~ कुरुहुत इरुव सर्प बुद्धिय, अदि फिकिरि तरि, ज़ि थि कुनु पुज़ इरुव, यदि कुनु अदि नंम्मनुव कॉदुबोव रेज़ान, विषय पा'ठ यदि थि देह नि चित्रसर्पिन समान असुज़ ज़ानोन, यदि कुनु अदि नु सुख-दुखक कारण आनान।

As
~~When~~ a picture-serpent when known as such, does in no way frighten us; so the Jiva-snake also when known as unreal and illusive, is less powerful to cause either pleasure or pain to us.

७) ~~सृष्टि~~ सर्पोऽयं भ्रमतो माल्यां एव लीयते ।
आत्मनः प्रोत्थितो भेदः आत्मन्येव विलीयते ॥

हिन्दी

जैसे भ्रमवश, माला को सर्प जानने का संकल्प, भ्रम के दूर होजाने पर, उसी माला में ही लीन होजाता है, उसी तरह अपनी आत्मा से, भ्रमवश, उठी हुई यह द्वैत/(अनेक प्रकार की आत्मा से भिन्न जानना), भ्रमनाश पर, स्वयं, उसी अपनी आत्मा में ही विलीन होजाती है ।

अंग्रेजी

यथा-सर्प, भ्रम-किल्पत, माल्ये/ककुक अध्यास, भ्रम मिटनेस यथा, तथैव माल्यमंजुष में लीन सर्पवत्, तिथय सर्प, भ्रमाभिकल्पित, पतनिस आत्मास निष्ठा, नष्ट सुत्र, कि द्वैतभावना, (अर्थात् आत्मास तु देहस भ्रमता असुत्व) हि, भ्रमागमनस यथा, सर्वनिस आत्मास मंजुष पतय लीन गच्छन ।

As under delusion, notion of a snake, ascribed to a garland, sinks into the garland itself, on the expiry of delusion, so does submerge the notion of Duality, in our self, wherefrom it had sprung through maya.

८) नैकं अंगुलीदामैः च यथैकं हेम संस्थितम् ।
उपाधिभिः अनेकोऽपि तथात्मैकः स्वभावतः ॥

हिन्दी

अंगद आदि सूत्रों द्वारा, नाना नामरूप धारण करने पर भी, जिस प्रकार सोना, वास्तव में एक ही सोना रहता है, इसी प्रकार उपाधि द्वारा अनेकता को प्राप्त होकर भी आत्मा एक ही है ।

कन्नडी

स्वर्ण ज़ेवर बनादिरु, नाना प्रकार नाव नु रूप धारण कॉरिरु ति, भिन्न कॉंड्य, मॉंज्य कॉंड्य, हु केवल अकोय स्वर्ण नु नलकिनि सोज़ान, इरुय कॉंड्य, आत्मा नि, उपाधियव किन्य अनेक रूप धारण कॉरिरु ति, हु, नलकिनि अकोय अद्वैत रूप आत्मा सोज़ान ।

As a piece of gold, though seen changed into various forms such as — bracelets, rings etc. remains ever as such, similar is the case with Atman, though seen manifold due to various limitations, remains ever immutable.

४) शरीरेऽवयवाः यद्वत् विकाराश्च यथा मृदः।
अद्वैतं द्वैतवत् भाति, तथा स्थावर-जंगमम् ॥

हिन्दी

शरीर के अंग, मिट्टी के बर्तन, जिस प्रकार शरीर और मिट्टी से अभिन्न होते हुए भी, भिन्न जैसे लगते हैं; उसी प्रकार, यह स्थावर जंगम विश्व भी, ब्रह्म से अभिन्न होने हुए भी भिन्न सा दीखता है।

कश्मीरी

शरीरुक अंग, तु, दमजि म्यचि-मानु, जिथ कांठय, शरीरु तु म्यचि निशि, मलाम न औसिथ ति, तोति, छि, अज़ानु किन्य, अलगुय मलान, तिथय कांठय, यि ज़ड़-ज़ड़ान-रूप, विश्वुति, ब्रह्मरूपुय केवल अंहिथ ति, छु/आसि ब्रह्म-मलगुय मलान।
मायाभिःकीन्य

As the various parts of the body, though really one with it (body), appear to be as if they are quite different from it; or the Earthen pots etc, though really one with Earth, seem to be as if they are separate from it, So the movable & immovable world though really Existing as one with Brahman, seems as if it were separate from It, through the power of Māyā.

१०) मणि-मेत्र-घृतादर्शेष्वेकं भवत्यनेक यथा ।
आत्यऽनेकमिवाऽऽत्मापि तथा धीष्वनुबिंबित: ॥

हिन्दी

रत्नों में, जल में, घी में, / तथा मुकुरों में, जिस तरह, हमारा मुख, प्रतिबिंबित होकर, केवल एक ही होने पर भी, अनेक शक्लें धारण कर, हमें, हर बार, अनेक-रूपी दिखाई देता है, उसी तरह, हमारी आत्मा भी, केवल एक ही होते हुए भी, हमारे भिन्न-भिन्न संकल्पों का जामा पहन कर विभिन्न रूपों से प्रकट होने लगती है ।

कन्नडी

रत्नन मेंज़, घा'निह मेंज़, ग्यवह मेंज़, व्यधि कीरा ह मेंज़,
पनुन बुध बुद्धिय, भिन्न पा'ठम, / कुनुम आ'त्मेय ति
भिन्नरूप गु महान, तिळिय पा'ठम गु धि आत्मा ति, केवल
कुनुम आ'त्मेय ति भिन्नरूप महान, यत्ति आ'दिह ळ्ळ
लाकेप्रकार कान बांन्न संकल्प इन्द परतु प्रकान गु ।

As our face, though single, appears like manifold as it is differently reflected in mirror, ghee, water, and other transparent gems, so our Atman looks as if it were manifold, when it is differently reflected in ours thoughts & imagination etc.

११) धूलिधूमाम्बुदैः यद्वत् मलिनी क्रियते नभः।
परामृष्टः तथैवात्मा विश्वद्भूः प्राकृतैः गुणैः॥

हिन्दी

स्वच्छ तथा निर्मल आकाश, जिस प्रकार, धूलि, धुआँ और बादलों से स्पृष्ट होकर अपनी स्वच्छता को खो डालता है, उसी प्रकार, यह दृष्टारी शुद्ध और मलरहित आत्मा, प्रकृति के गुणों से (सत्व, रजस् और तमस् से) स्पृष्ट होकर मलों को धारण करती है।

कश्मीरी

दूहु, अुज़्ज़ु तु गरदि-गुबारु हूंत्य यिथ-थांवय यि निर्मल आकाश सं'ल्युन छु बोज़नु यिवान, तिथय थांवय, यि होन शुद्ध तु मलरहित आत्मा, प्रकृति-इन्द्रयन गुणन हुन्द स्पर्श प्राप्त कंरिथ, छु, वार-वार मेल्युन हुयान गछुन।

As the sky, though cristle clear, looks darkened by clouds, smoke, dust etc., so the Self, though pure, looks darkened by the qualities of nature (प्रकृति), i.e. सत्व, रजस् and तमस्।

English :-

2a) The Atman, while residing in our body, appears, as if it also, like our body, undergoes, birth & death, although it is unaffected by both; just like a pillar ~~moving to & fro~~ reflected in stormy water, looses going up & down though deeply devien into it (water).

22) आद्यन्तवति देहेऽस्मिन् तथाभूत इवेक्ष्यते ।
वीचिमत्यम्भसि स्तम्भः यथा भवति चलः चले ॥

हिन्दी

आदि और अन्त वाले देह में अवस्थित, यह आत्मा भी देह की तरह ही, आदि और अन्त वाली जैसी दिखाई देती है,+ (वास्तव में यह दोनों (आदि-अन्त) उसे छू भी नहीं सकते)+ ठीक, पानी में अवस्थित, उसी स्तम्भ की तरह, जो, वास्तव में, स्थिर और अचल होते हुए भी, चंचल पानी में हिलता सा दिखाई देता है ।

कश्मीरी

हा'निह शरीरस मंज़ रूज़िथ, थि आत्मा, छु, हानि शरीरुक्य पा'ठिन, ज़ायवुन तु मरुन ज़ून मालान, (युस ग्युन तु मरान आंनिह छुंमीनु) तिथय पा'ठय, अथ पा'ठय, पा'निस मंज़ ज़ोर् ठुकुरुत थम, थर तु अचल आ'सिथ ति, छु, पानिकिस हिलनस थठ, मसान ज़ून ति थिति छु हिलान तु डुलान ।

※ The Atman, while residing in our body, appears, as if it also, like our body, undergoes birth & death, although it is unaffected by both. Just like that ~~deep dive~~ pillar, reflected in a stormy sheet of water, ~~which is~~ ~~looks peaceful~~, although deeply devoid in it, ~~looks un-~~ ~~wavering~~ looks undulating, although deeply devoid in it.

१३) अग्नि संगात् यथा लोहं अग्नित्वं उपगच्छति ।
आत्म संगात् तथा गच्छत्यात्मतां इन्द्रियादिकम् ॥

हिन्दी

जैसे लोहा अग्नि के संग से तप्त-तप्त होकर अग्नि के गुणों को ग्रहण करता है, वैसे ही, आत्मा का संपर्क पाकर, यह हमारी देह और इन्द्रियाँ आदि आत्मवत् हो जाती हैं ।

कश्मीरी

अग्नि-सेंग-किम्, थिवपा'ठ्य, प्रॅस्तुर, वुज़ुलु नुत बनिथ, अग्नि-गुण ग्रहण करान छु, तिथपा'ठ्य, थिम्ह हान्य इन्द्रिय, देह आदि २, ति, छि, आत्मा-सुद संपर्क प्राप्त क'रिथ, ~~आत्म-वत्-गुम~~ आत्म-सूपूय बनान ।।

As iron, thrown into fire, becomes red-hot and ~~thus~~ as such attains the qualities of fire, so the body and its organs etc. imbibe the qualities of the self as a result of their association with it.

(८८) अदृश्यो दृश्यते राहुः गृहीतेन यथेन्दुना ।
तथानुभवमात्रात्मा दृश्येनात्मावलोक्यते ॥

हिन्दी

जैसे यह अदृश्य राहु तब तक आँखों से नहीं देखा जाता है जबतक न यह चन्द्रमा को ग्रस लेता है । वैसे ही यह आत्मा भी, जो केवल अनुभवगम्य है, तब तक नहीं देखी जाती है जब तक न यह, दृश्य जगत् में, ओतप्रोत होगई हो ।

कश्मीरी

युस राहु अहि बोज़नु छुनु शिवान नतम, इतम न शि चन्द्रस ग्रास छु कान । तिथय पा'छ शि आत्माति, युस केवल अनुभवगम्य छु, शि/नु अंछय/नतम ह्यकान पज़िनॉविथ, इतम शि यथ दृश्य ज़गतस मंज़ च़ामुत अहिनु ॥

As this invisible Rahu remains invisible to us, so long as it does not Eclipse the moon, so this Atman, although perceivable through pure experience alone, is made visible and by us only when it is pervading the visible world.

आत्मनो जडसंगात् स्यात् अनात्मत्वं, जडस्य तु ।
स्यात् आत्मसंगात् आत्मत्वं, जलाग्न्योः संगवन्निथः ॥

हिन्दी

जड के संग से आत्मा को अनात्मता प्राप्त होगी तथा जड भी आत्म-संग से आत्मत्व धारण करेगा । जैसे जल और अग्नि, परस्पर संग से, एक दूसरे के रूप को क्रमशः धारण करेंगे ।

कन्नडी

देहद शून्य संग बंदिरे, आत्मा ति बनि जड-देहरूपुव । एंतेनेन, जड-देह ति/बनि आत्म~~सहित~~-संग-सूत्तिन, बनि आत्म-रूपुव । अथवा'ह्य, अन्य नु नार, अरव अंक्यदिंदि संग-सूत्त्य, अरव अंक्यदिंद रूप-द क्रमपूर्वक धारण कवन ।

Atman, identifying itself with the body will, from into Anātmatva naturally, and the body identifying itself with the Atman will naturally assume Ātmatva, just as the water & fire associating mutually do assume each others' forms.

६६) अनात्म जड चिन्मांशा नयन्नत् चिद्वपुः जडम् ।
महाजलनतो वह्निरपि स्वं रूपं त्वं उज्झति ।।

हिन्दी

यह आत्मा, चिद्स्वरूप होते हुए भी, अनात्म और जड चिन्मांशों (अन्तःकरण आदि) पर निरन्तर भावना धारण करने से, जिस जड-रूप को धारण करती है (अपने को देह-रूप समझने लगती है), उस जड-रूपता को वह, महत् चैतन्य में समाविष्ट होने पर, उस प्रकार त्याग देती है, जिस प्रकार अग्नि, समुद्र में प्रवेश करने पर अपने अग्नित्व को त्याग देती है ।

कन्नडी

ಯೀ ಆತ್ಮ, ಚಿದ್ರೂಪವಾಗಿರುವ ಹೊರತು, ಅನಾತ್ಮನ ಜಡರೂಪಿಯಾದ ಚಿನ್ಮಾಂಶಗಳ (ಅಂತಃಕರಣ ಆದಿಯ) ಮೇಲೆ, ನಿರಂತರ ಸಮಾಧಾನವನ್ನು ಧರಿಸುವುದರಿಂದ ಯಾವ ಜಡರೂಪತೆಯನ್ನು ಪಡೆದಿದೆಯೋ, ಅದು ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದು, ಆ ಮಹತ್-ಚೈತನ್ಯದ ಜೊತೆ ಸಮಾವಿಷ್ಟ ಆಗುವುದರಿಂದ ತನ್ನ ಜಡತ್ವವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸುವಾಗ, ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಬೀಳುವ ಅಗ್ನಿ, ಸಮುದ್ರದ ಜೊತೆ ಅಗ್ನಿತ್ವವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸುವ ಹಾಗೆ ಆಗುತ್ತದೆ ।।

The form of अनात्म्य-(जड), which the Atman, notwithstanding its being चिद्रूप, likes to assume, under constant pondering over, the insensitive (जड) and unreal body and its organs of senses etc., ~~come to possess~~, gets liquidated instantly on its entering into महाचैतन्य, just like the fire, which gets extinguished on entering into ocean.

९७ इक्षौ गुडः तिले तैलं काष्ठे वह्निः दृशि व्ययः ।
शैलेऽयो आज्यं मनुष्यात्मा लभ्यते चैव यत्नतः ॥

हिन्दी

जिस प्रकार, ईख से गुड़, तिलों से तेल, लकड़ी से आग, पत्थर से लोहा, बहुत ही काफी प्रयत्न करने पर पाये जाते हैं, वैसे ही, इस शरीर में से आत्मा को पाया जाता है ।

कन्नडी

यिव पांडव हमटा मेहनत करनु सुत्य, नैशकर-मंजु सोव, तेल-मंजु तील, काठ-मंजु नार, व्यधि कन्यव मंजु शैलनु, प्राप्त सपदान छु, तियय पांडव छु मनि शरीरु-मंजु आत्मा ति प्राप्त सपदान ।

It is with strenuous Efforts, that Atman can be found out from within the body, just like sugar from the sugar-cane, oil from the sesamum, fire from wood, iron from stone, and ghee from the cow's milk.

९८) स्फटिकाश्मनि नीरन्ध्रे स्थितं खं वीक्ष्यते यथा।
तथा सर्वपदार्थेषु चिद्रूपः परमेश्वरः॥

हिंदी

जिस प्रकार एक ठोस संगिमर्मर के पत्थर में, 'खं' अर्थात् शून्याकाश का अस्तित्व पाया जाता है, उसी प्रकार, सारे पदार्थों में चिद्रूप परमेश्वर का अस्तित्व पाया जाता है।

कश्मीरी

यिथ पा'ठय अ'कास ज़ादि-वठि (ठोस) खऽकुचि कनि मंज़ शून्याकाशुक (प्रतिबिंब) आसुन, बोज़नु छु यिवान, तिथय-पा'ठन छु चिद्रूप परमेश्वर-सुन्द अस्तित्व ति, सारिनुय पदार्थन मंज़ ज़ाननु यिवान।

As ~~within a solid crystle stone~~, 'खं' space or s'ūnya, ~~is found out the pervading~~ pervades a solid crystle it, so ~~does the~~ does the supreme lord of the form of चित्, ~~seen permeating~~ permeate all the objects of the world.

English:— Just as 'खं' (space or s'ūnya) is seen pervading a solid crystle, so does the चिद्रूप supreme lord permeate all the objects of the world.

१२) बहिरन्तः स्फुरत्-ज्योतिः रत्न कुंभप्रदीपवत्।
स्वप्रकाशात् तथैवैकः स्वरूपं आत्मनः तथा ॥

हिन्दी

रत्न कुंभ में अवस्थित एक ही प्रदीप, जिस तरह, अपने प्रकाश से बाहर और अन्दर, रोशनी कर देता है, उसी प्रकार आत्मा का भी स्वरूप है जो 'अहं' में अवस्थित, केवल एक ही होने पर भी, बाहर और भीतर उजाला कर देता है।

कन्नड़ी।

रत्न-कुंभद मंजिनल्लि इरुव दीपवु, हेगे तन्न प्रभेयिंद हारगू ओळगू बेळकन्नु मूडिसुत्तदे, हागे, आत्मनु तन्न स्वरूपवन्नु देहदल्लि 'अहं' अर्थात् हृदयदल्लि मंजिन हत्तिनंते, हारगू ओळगू बेळकन्नु मूडिसुत्तदे।

Just as a lamp, placed inside a transparent jar, lights both within & without, so does the self, seated within our body, shed its light both within & without.

20) दर्पणे बिंबितो सूर्यः प्रकाशं कुरुते यथा।
तथा प्रकाशयत्यात्मा स्वच्छधीस्थः प्रबिंबितः॥

हिन्दी

दर्पण में प्रतिबिंबित होकर, जिस प्रकार, सूरज प्रकाश को प्रदान करता है, उसी तरह, यह आत्मा भी निर्मल बुद्धि में प्रतिबिंबित होकर, पदार्थों को प्रकाशित करता है।

कश्मीरी

यिथ-वा'ठय, सिंजि, अ'नस मंज़ प्रतिबिंबित सपदिथ, पज़ुन प्रकाश्य दिवान, मि आत्मा, छि, छु, हियथ-वा'ठय, सानि निर्मल बुज़ मंज़ प्रतिबिंबित सपदिथ, यारिनुय पदार्थन प्रकाशान करान।

English:-

As the Sun shines forth when reflected in a mirror, so does the Atman, shed its radiance when reflected in the clear intellegence of the Wise.

२९) यत्र स्फुरेत् इयं विश्वश्रीः प्रतिभा मात्र-रूपिणी ।
रज्ज्वां भुजंगवत् भाति, सोऽयं आत्मा सदोदितः ॥

हिन्दी

दृश्यप्रपंच की यह चमकदमक, जो केवल प्रकाशात्मक है, जिस पर आधारित होकर, झूठी होने पर भी, ऐसी वास्तविक भास होती है, जैसे, अज्ञानवश, रस्सी पर सांप हर्ष-वृद्धि होती है, वही यह आत्मा है, जो सदा जाग्रत है ।

कश्मीरी

हारी ज़गतुच थि चमक-दमक, यत्र केवल प्रकाश-रूप यत्र, यंमस् प्यठ हुंदिथ, अमुज़ हंज़िथ ति, दिह तिथ पज़ भ्रान, मुध, रज़ि प्यठ, अज्ञानवश, अहि सर्प बुद्धि हुंदिथ पुन भासान, तंमि सुय यिह सु- आत्म आत्मा यंदि ज़ागरूक छु रोज़ान ।

This worldly splendour, which is of the nature of pure light alone, though totally false, is yet supported by whose grace, appears as real as, due to delusion, a snake in a rope, that Supporter is known as an ever-awakened Atman.

22) आद्यन्तरहितः सत्यः चिद्रूपः निर्विकल्पकः ।
आत्मा निरुपिताकाशः जीवस्याग्रयः परात्परः ॥

हिन्दी

जिस का न आरंभ है और न अन्त है (या जो जन्म-मरण रहित है), जो सनातन सत्य है, जो चैतन्य स्वरूप है, जो संकल्प-विकल्पों से निर्मुक्त है, जिस का अस्तित्व आकाशवत् (निरुपम) है; जो पर से भी परतर है, उसी को आत्मा के नाम से जाना जाता है और जो जीव से पूर्व आविर्भूत हुआ है (जीवस्याग्रयः) ।

कश्मीरी

आत्मा छि त'च्य वनान, युस आदि तु अन्तु नास्त छु; युस पुज़ तु सनातन छु; युस चिद्रूप छु; युस संकल्पव चिक्र मुक्त छु; युस आकाशवत् छु निर्मल तु रूपनास्त; युस यदि स्वोतु उद छु; अमि, युस ज़ीवस क्रोण्ठय प्रकट हपुदमुत छु ।

Atma is to be known as one who is without beginning and end; who is an Eternal Youth; who is of the nature of चित् (consciousness); in whom no ideas arise; who is as pure as Ether; who, by birth, is senior to Jiva; and who is said to be higher than the highest.

२३) आत्मा विशुद्ध-चैतन्य-स्वरूपः शाश्वतः विभुः।
निर्विकारः स्वयंज्योतिः स्वभावोऽर्कप्रकाशवत् ॥

हिन्दी

आत्मा सर्वव्यापक, सनातन, तथा शुद्ध-चिद्रूप है। वह निर्विकार है और सूर्य के प्रकाश की तरह स्वभाव से ही स्वयंज्योतिः है।

तमिळी

आत्मा शु सर्वव्यापक, सनातन ममिय शुद्ध-चिद्रूप। तु शु निर्विकार, तु सूर्य-प्रकाशिक पान्मम स्वभाव-तिनी पानम ज्योतिवुन (स्वयंज्योतिः)।

The Atman is said to be of the form of transcendent consciousness, eternal and all-pervading. He is changeless, and known as to be ever possessed of inborn light like the light of the self-radiant Sun.

24) आत्माऽनुभवमात्रात्मा सर्वदृक् सर्वसंश्रयः।
प्रकाशोऽनन्यचैतन्याऽव्यतिरेकोऽनलौष्ण्यवत्॥

हिन्दी

आत्मा केवल अनुभवगम्य है। सर्वव्यापक होकर सर्वाधार भी है। यह वह प्रकाशस्वरूप है, जो चैतन्य से ऐसा जुड़ा हुआ है जैसे अग्नि और उसकी उष्णता।

कश्मीरी

~~यह आत्मा केवल अनुभव से जानी जाती है~~

यि आत्मा छु केवल अनुभव-सूती ज़ाननु छिवान।
यि छु सर्वव्यापक तु सारिकुय आधार। यि छु
छु प्रकाशरूप, युस चैतन्यस हूंद्य छु लिथपाठय
नीलिथ, लिथपाठय, नार नु तमिच उष्णता - युपूनेव - ✓

केवल अनुभव ।

The self is to be ~~discerned~~ realised through
Self-experience alone. He is Omnipresent and
Support of all. He is of the nature of that light
which is inseperably united with chaitanya,
as fire and its heat, are united together,

२५) चित्तवर्जित-चिन्मात्रः परमात्माऽवभासकः।
स बाह्याभ्यन्तरव्यापी निष्कलो निश्चलाश्रयः॥

हिन्दी

यह आत्मा केवल वह चैतन्यरूप है जिस में चित्त का भी स्थान नहीं। वह हमें दृश्य जगत् की पहचान ~~हमें~~ ~~प्रदान~~ करने वाला परमात्मा है। अन्दर और बाहर वही व्याप्त है। वह पूर्ण है और उस का स्थान अटल है।

कश्मीरी

यि आत्मा छु त्युथ चैतन्य-रूप यथ मंज़ चित्त सु ति जाय
छु ~~नाव~~। यि छु परमात्म-रूप। अंदरुंज़ि बेरुणि सूती छु अंश्य यि हेकय ज़गतुक प्रपंच ज़ानिथ छु काम। अन्दर तुन्यबर तु प्रथ्वज़ि छु यि व्यापिथ ~~रूनिम~~ रुज़िथ। यि छु पूर्ण तु अटल।

That Atman is, of the nature of चित् alone, in which there is no room even for चित्तं (mind). It is called Paramātmā. It is the revealer of things. He pervades the world, within & without. He is whole & pastless; He ~~is of~~ stands on an unwavering foundation.

(28) स आत्मा चिन्मयः स्वच्छः प्रबुद्धोऽप्यक्षयच्युतः।
हेय-ग्राह्योज्झितो देशकालजात्याद्यसंगतः॥

हिन्दी

वह आत्मा, चिन्मय, स्वच्छ, और सदा जागरूक है। वह अक्षर है, उस में त्याज्य और आत्माज्य विषयक भावनाएं नहीं लुप्त होगई हैं। उसे देश, काल, जाति आदि से कोई संबंध नहीं॥

काश्मीरी

सु आत्मा छु चिन्मय - चेतनरूप, निर्मल तु सदा जाग-रूक। छु छु अक्षर। म'ञ्जिह मंज़ छु नु ग्रंमि प्रकारुक थि कॉंह ख्याल, ज़ि ग्यह क्या ग्रहण करुन तु क्या परित्याग त्रावुन। देशह, कालह तु जातिह हूति, ति, छु नु म'ञ्जिह कॉंह संबन्ध।

The Ātman is of the nature of Chit, pure and ever-awake. He is free from deminution & unmindful towards हेय & ग्राह्य i.e. which Things should be rejected and which should be accepted. He is unrelated to time, space, caste and creeds.

३७) ब्रह्माण्डे च यथा वायुः सर्वभूतगतस्तथा ।
स एव भगवान् आत्मा, तनुः मुक्ताइव स्थितः ॥

हिन्दी

ब्रह्माण्ड में अवस्थित जीवजगत में, जिस प्रकार, वायु व्याप्त है, उसी प्रकार, वही भगवान् आत्मदेव भी जगत् में ऐसा ओतप्रोत है, जैसे मोतियों के हार में, सूत्र, ओत-प्रोत होकर, रहता है ।

कश्मीरी ।

यिथ-पांठय ब्रह्माण्डक्यन सारिनूय ज़ीवन मंज़, छु, हवा अर्थात् प्राणवायु ब'शिथ, तिथय पा'ठय छु भगवान् आत्म-देव तिज़गतस मंज़, म्वल-माल मंज़, पन ज़न, व्याप-क-रूप-किन्य सूज़िथ ।

Just as, in the Egg of Brahmaan (in the Universe) the Ether permeates all the living beings, So also, does, the all powerful आत्मन्, pervade the whole world, as a peice of Thread is found running Through the garland of pearls.

२८) यैव चित् गगनाभोग भूषणे व्योम्नि भास्करे ।
धराविवरकोशस्थे सैव चित् कीटकोदरे ॥

हिन्दी

समग्र आकाश के विस्तार को भूषित करने वाले भास्कर में, जो चैतन्य व्याप्त है, वही चैतन्य पृथ्वी के छिद्र के गर्भ में पड़े हुए, एक सूक्ष्म कीड़े में भी वास करता है ।

कश्मीरी

आकाश-मण्डल-कि छ ह'न्द्यि सूय विस्तारस द्योमाय-मान करनय'तिह, स्यि- भास्करस, मंज़, युस चैतन्य, निवास करान छु, सुय चैतन्य छु ज़मीनि-इन्दिस ज़'न्दिस मंज़ येमुतिस अ'किस मामूली क्य'मिस मंज़ ति वास करान ।

The eternal life, that functions in the sun, the ornament of the expansive sky, functions, in the same way, within a tiny insect, lying in the interior of the cavity of Earth.

२२) न बन्धोऽस्ति न मोक्षोऽस्ति ब्रह्मैवास्ति निरंतरम्।
नैकं अस्ति न चाऽद्वैतं संवित्स्फारा विजृम्भते ॥

हिन्दी

इस संसार में न बन्ध है और न मोक्ष है; जो कुछ है वह केवल ब्रह्म ही है। न वहाँ द्वैत है और न अद्वैत है। यह केवल संवित्-देवी के स्फुरण का ही विलास और उल्लास है।

कश्मीरी

यथ संसारस मंज़ न छु बन्ध गछुन तु न छु मक्-
लुन। यि केंह्या छु, सु छु केवल ब्रह्मुय ब्रह्म।
न छु यति द्वैत न छु अद्वैत। यि केंह्या छु,
सु छु संवित्- देवी हुन्द स्फुरण तु उल्लासुय
होत केवल - व्यापि तु केंह।

There is neither bondage nor liberation.
It is the Eternal Brahmam alone that
exists everywhere. There is neither द्वैत
nor अद्वैत. It is Samvit alone which
blooms forth far and wide.

३०) ब्रह्म चित्, ब्रह्म भुवनं, ब्रह्म भूत परंपरा।
ब्रह्माऽहं, ब्रह्म मत्-शत्रुः, ब्रह्म मत्-मित्र-बान्धवाः॥

हिन्दी

यह चित् ब्रह्मरूप है; त्रिभुवन भी ब्रह्म रूप है;
यह जीवों का अविरत होता भी ब्रह्मरूप ही है; ब्रह्मरूप
मैं भी हूं, मेरा शत्रु भी ब्रह्मरूप है, तथा
मेरे मित्र और बन्धु भी ब्रह्मरूप ही हैं।

कश्मीरी

यि च्यथ छु ब्रह्म-रूपुय; यिम त्रे भुवन ति
छि ब्रह्मुय; यि जीवसृष्टि नि छऽ ब्रह्म-रूफ।
ब्रह्मुय छुस ब'नि, ब्रह्मुय छु म्योन शे'थुर;
ब्रह्मुय छि म्या'न्य बन्धव त बान्धव।

Brahman is the same as चित्-consciousness.
It constitutes the three worlds; Brahman is
also this stream of creation: I am Brahman.
my enemies, friends and relations are also
~~of the / from~~ same as Brahman.

It is Scivit alone, which, in its
~~natural form~~ inherent nature, functions Everywhere.
The motion of [illegible] as separate from each other
is all unreal.

३२) यदस्ति यत् भाति तत्-आत्मरूपं,
यत् चाऽन्यतो भाति, न चाऽन्यत् अस्ति ।
स्वभाव-संवित् प्रतिभाति केवला,
ग्राह्यं ग्रहीतेति मृषा विमर्शः ॥

हिन्दी

जो कुछ भी संसार में विद्यमान है अथवा भासता है, वह आत्मरूप है; जो कुछ आत्मा से भिन्न दीखता है, वह भी इस से वस्तुतः अभिन्न है । यहाँ तो केवल एक संवित् का ही निसर्गरूप से सर्वत्र उल्लास है । ज्ञाता-ज्ञेय की भावनाएं जो हैं, वह मिथ्या विकल्प हैं ।

कश्मीरी

यि केञ्ह्या हलारत संज़ छु या भासान छु सु छु आत्म-रूपक । यि केञ्ह्या आत्मास निशि भिन्न छु भासान सुनि छु वस्तुतः आत्मास निशि अभिन्नुय । छीह्कि केवल संवित्-देवी ~~कुकुय~~ निसर्ग~~भाव~~-रूप किन्न उल्लासित सर्वदिश चमकान । ज्ञाता तु ज्ञेयिचि भावनाचि मिथ्या छह, तिमु ग्रह्य ~~ग्रहीय~~ संज़ी मिथ्या नुअ'नुज़ुय ।

Whatever there exists or seems to exist, that all is of the form of Atman; whatever exists other than that, that also is of the nature of Atman.

Chapter X.

(Salvation - मुक्ति)

Vasishtha says - वशिष्ठ जी कहते हैं :-

२) स्वप्नेन्द्रजालवत् पश्य दिनानि त्रीणि पंच वा।
मित्र-भृत्र-धनागार-दार-कायाद-हेपदः ॥

हिन्दी

हे राम, मित्रों को, धन-दौलत को, तथा ज़मीन, स्त्री और हेमचि को, तुम, अचिरस्थायी समझो। इन की अवधि केवल दिनों तक ही रहने वाली है। यह सारे पदार्थ स्वप्नसमान हैं या किसी जादू के खेल के समान। इन पर तुम विश्वास न करो।

उर्दू।

हे राम, ज़मीन, घर-बार, यार दोस्त, ज़नान, दौलत, बन्दु बान्धव — यिम ज़ानुरव ज़ि यिम छिनु ज्यादह समयह रोज़न वाल्य। यिहुन्द अहर छु केवल छन्न दोहन रोज़ान। यिम छे स्वप्न-तुल्य, या जादीगर-खेल हिश। यिमन प्यठ करि नु छे विश्वास करान।

Consider, O. Ram, all your friends, lands, wealth, wife, sons and kith & kin, as unreal, as a dream or a magical show ~~or as if they were seen in a dream~~, and as lasting only for a few days/- say three or four days, and not more.

३) तृष्णामात्रात्मको बन्धः तत्-नाशो मोक्ष उच्यते।
भवाऽहंवृत्तिमात्रेण प्राप्तनुष्टिर्मुहुः मुहुः ॥

हिन्दी

जब तक तृष्णाएं तुम्हारे दिल में ज़िन्दा हैं, तब तक यही समझलो कि तुम बन्धन में पड़े हो। उनके नाश होने पर ही तुम अपने को मुक्त जान लो। निर्लिप्त-भाव से व्यवहार करने पर ही तुम संतुष्ट होगे।

कश्मीरी

चुय शुख तनुयतामस बन्ध, मुक्तस च'निस दिलस मंज़, तृष्णायि घट कॉरिथ मोज़न। यति थिमु गलन, नथलि ज़ान ज़ि चु मुकलयोरव। संसारकिह व्यवहारस मंज़ थव निर्लिप्तता। अदु, सालि, प्रारब्ध मनुक संतोष।

It is cravings & desires alone, that cause bondage. Remove them & you will find yourself at the door of salvation. Cultivate a habit of detachment for worldly dealings & try to be contented more & more.

२) दृश्य-दर्शन संबन्धे सुख संवित् अनुत्तमा।
दृश्य संवलितो बन्धः, तन्मुक्ता मुक्तिरुच्यते॥

हिन्दी

दृश्य जगत् के साथ, ज्ञानेन्द्रियों के संपर्क हो जाने पर, एक अपूर्व सुख का अनुभव प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन दृश्यसुख के रंगबिरंगे तारों की लपेट में आकर ही जीव बन्धनों में फंस जाता है। उन से छूट जाए तो 'मुक्त' की संज्ञा से कहलाएगा।

कन्नडी।

ज्ञानेन्द्रियन, अवि मनन्यनविषयन सुत्य, स्युल सुखवानु, अवि, ई जीवक्के, अपूर्व सुखवन्नु, उपलब्धि माडुवनु। लेकिन संसारवन मोहन तारन मंज फसिद्द जीव बन्द गट्टुवनु। अवि बिडिसि तारन निन्दिरो मात्र मुक्त एन्दु करेयुवरु।

As a result of our attachment with the various sense-objects, there arises/~~an intense joy~~ that supreme bliss, which thrills us. But the curse is, that jiva, entanglidly these sweet threads of pleasures falls into bondage, when released from these snares, he is known as mukta (released).

४) ध्रुवं तदेवातोऽन्विच्छे पदं तत्रावलम्ब्य तत्।
ततो ह्यास्यान्तरं विश्वं सावधानं निरूपय सा॥

हिन्दी

'अस्ति' और 'नास्ति' के दरम्यान, जो ध्रुव अर्थात् निश्चल अवस्था है, उसे प्राप्त करके, तुम फिर उसी पर दृढ़ होकर रहते हुए, और अन्दर और बाहर दृश्यमान इस विश्व के प्रपंच को न ग्रहण करने और न परित्याग की भावना धारण करो।

कश्मीरी

'अस्ति' तु 'नास्ति'— इमन द्वन दरम्यान युस थि, ध्रुवुन् अर्थात् निश्चल तु निश्चल, स्थान छु, हु प्राप्त करनु पतु, तत्थ च्यठ दृढिथ गुज़रिथ, अंदरु तु बाहरु, युस थि दृश्यमान जगतुक प्रपंच छु, तथ च्यठ, नाहि त्यांन्य थिंग भावना धारण करुन्य, ज़ि न छु स्यद अमिकि ग्रहनुक/यान, न छु स्यद अमिकि त्यांविथ छुनुनुक कोंद अफसूस।

After having attained that transcendent cruel unshakeable position, which is midway between 'is' & 'is not', now hold on to it fastly. You may then make a full & careful survey of all around you in and out, but do not show any inclination to accept or reject the same.

४), जडाजडहेयोर्मध्ये यत् तत्त्वं पारमार्थिकम्।
अनन्ताकाशहृदयं मा गृहाण विमुञ्च मा ॥

हिन्दी

जड विषयक चिन्तन और अजड विषयक चिन्तन के मध्यवर्ती जो पारमार्थिक तत्त्व है इस विस्तीर्ण शून्याकाश का सार-रूप है, उस की जानकारी के बाद, तुम उदासीनवत् आचरण करते रहो अर्थात् न उसके ग्रहण करने अथवा त्यागने की भावना मन में धारण करो।

कश्मीरी

जड तु अजड, भिन द्वन ध्यठ, चिन्तन करान करान, मंज़-बाग्य, मुख़ बु परमार्थ तत्त्व, यमि विस्तीर्ण आकाशुक सार-रूप ज़ानरब छुस, तमिचि ज़ांन्य मंज़ गड़ि चोन उदासीनवत् आचरण करान, अर्थात् न गड़ि चोन तथ ग्रहुल-वुल करान न गड़ि। त्रोविथ छुनुन।

You may neither entertain or reject that fundamental truth- the vital part of this limitless ether, which you may come to realise as existing midway between the matter & the spirit.

English :-

6) The very acceptance of the Existence of the दृश्य i.e. the world, on part of the द्रष्टा i.e. the ~~Atman~~ jīvātman, causes the latter's bondage. The jīvātman falls into bondage simply because of this contact with the worldly objects. He feels liberated only at the disappearance of the same.

६) द्रष्टृदृश्यस्य सत्ताऽङ्ग, बन्ध इत्यभिधीयते ।
द्रष्टा दृश्यवशात् बद्धो दृश्याभावे विमुच्यते ॥

हिन्दी

हे रामरे! द्रष्टा का जो दृश्य के अस्तित्व का अंगीकार करना है, वही उस को बन्धन में डालने वाला बन्ध है। दृश्य के वशीभूत होकर ही द्रष्टा बन्धन को स्वीकार करता है, वही दृश्य के आकर्षण से दूर रह कर मुक्त हो जाता है।

कश्मीरी

ही ठिक, युस थि जीवहुन्द, दृश्य जातनुकि अस्तित्वुक स्वीकार करान छु, युय छु तेमिस बन्धत्वुक अनान। दृश्यस वशीभूत हयदिथुय, युस द्रष्टा-जीव, बन्धन स्वीकार करान छु, युस छु पानय आज़ाद नछान, यलि तेमिस दृश्युक आकर्षण ख़तम नछि।

Very acceptance of the Existence
O Rama! the ~~bloomi from~~ of the
Sense-objects / ~~by the द्रष्टा~~ him ~~(the Enjoyer जीव)~~
~~under their influence~~, goes by the name
of bondage; this in other words means,
that द्रष्टा or जीव, falls into Bondage simply
because of the दृश्य, and feels liberated
only, at the disappearance of the same.

७) द्रष्टृ-दर्शन-दृश्यानि त्यक्त्वा, वासनया सह।
दर्शनं प्रथमाभातं आत्मानं हृत्युपास्महे ॥

हिन्दी

द्रष्टा, दर्शन और दृश्य – इन तत्व के अस्तित्व को भूल कर, एवं वासना (अहन्ता) को भी छोड कर, तदनन्तर, सब से पहिले, जो, हमको, एक उत्कृष्ट अनुभव परमार्थदर्शन का होता है, वही आत्मानुभव है, और हमें उसी आत्मदेव की उपासना करनी चाहिए।

कश्मीरी।

ज्ञाता, ज्ञान तु ज्ञेय – यिम त्रेयिवय त्रॉनिथ, वयंय यिमनुय सून्य अंहनाय ति दकु करिथ, तव-पतु युस् असि परमार्थ-दर्शनुक उत्कृष्ट अनुभव हासिल सपदान छु, सुय नव आत्मदर्शन। मंझ करव नमिनुय आत्मदेवुन्य उपासना ॥

After having ignored, besides Vāsanā (अहन्ता), the existence of the ~~seer~~ Experiencer, the Experience and the Experienced, the foremost Experience which confronts us, is that of the Ātman (आत्मदर्शन), who, thereafter, becomes the object of our worship.

८) द्वयोः मध्यगतं नित्यं अस्ति-नास्तीति पक्षयोः।
प्रकाशकं प्रकाश्यानां आत्मानं तमुपास्महे ॥

हिन्दी

'अस्ति' और 'नास्ति' अर्थात् 'है' और 'है नहीं'— इन दो पक्षों के दरम्यान जो कुछ सनातन वस्तु अवस्थित है, जो प्रकाश्य को भी प्रकाश प्रदान करने की क्षमता रखती है, वही आत्मदेव है और उसी की हम/इका वन्दना करें।

कश्मीरी

'छु' तु 'छुनु'- यिमन द्वन, चिनन-इन्द्रियन-~~इन्द्रियन वचन~~ पक्षन, मंज़्झान, युस कॉइ चीज़ा, सनातन-स्वपकिन्य अवस्थित छु, युस, प्रकाश्यस ति प्रकाशदिनुक सामर्थ्य/अवान छु, स्वय छु यि आत्मदेव— तंमि सुय करव अंस्य पूज़ा ॥

The fundamental principle, which is Eternally existing midway between the two ways of our thinking i.e. 'He is' and 'He is not', is called Ātman, possessing the innate capability of illuminating the luminaries (as such He is) and the sole of object of our worship & meditation.

४) निद्रादौ जागरस्थाने यो भव उपजायते ।
तं भवं भावयन् साक्षात् अक्षयोऽनन्दं अश्नुते ॥

हिन्दी

नींद के आरंभ पर, तथा नींद को छोडने के बाद, जो भाव, एक आत्मज्ञ पुरुष के मन में उत्पन्न हो जाता है, उसी भाव पर मनन करनेवाला वह पुरुष साक्षात् उस आनन्द को प्राप्त करता है जो कभी क्षय को प्राप्त होता नहीं ।

कन्नडी

यूवंणु निद्रे नु यूवंणु मत् क्षणिय, यु भव मंकिस आत्मज्ञ पुरुष-हुंदिह मनह मंज उत्पन्न ऽ स्वपदान, तंथ भवस्थ यथ मनन-चिन्तन करन वांलि हु पुरुषह ऽ, साक्षात्, सु आनन्द, प्राप्त स्वपदान, यु हु, नु ऑंद ति, नाशस्थ ऽ, प्राप्त ऽ गुहान ।

A seeker after Truth, actually attains undimmed bliss, while absorbed in pondering over that state of mind, which he experiences in the beginning of going to sleep or that (state) which presents itself to him at the end of the waking one.

१०) प्रक्षीणसर्वसंकल्पा शैलवत् अवस्थितिः।
जाग्रत्-निद्रा-विनिर्मुक्ता, सा स्वस्वरूपस्थितिः परा॥

हिन्दी

उस चरम उत्कृष्ट अवस्था को 'स्वस्वरूप-स्थिति' की संज्ञा से पुकारते हैं; जिस में सारे संकल्प क्षीण हो गए हों, जिस में शिला की जैसी स्थिति (को एक) आत्मन अनुभव करे, और जो न जाग्रत् अवस्था और न निद्रा की अवस्था से अभिभूत रहे।

कन्नडी

सर्व गळि स्तब्ध बंड दृढ यव 'स्वस्वरूपस्थिति' येनान्दु, यव संज्ञ संकल्प मादि, आत्मन, सोंदी निरुत्तय; यव-संज्ञ, आत्मन, कल्लि-संज्ञ शिला, स्थिति, अनुभव मादि, मत्तु यव संज्ञ नू जाग्रत्, नू नू निद्राधि संज्ञ दृढ मरुत्तिरु सदा।

What- stone-like still condition, wherein all thoughts cease to function, which remains unaffected during the sleeping and waking states, is called the highest spiritual Experience i.e. स्वस्वरूपस्थिति, the peaceful vision of one's own Self.

२१) जडलं धर्मेमित्वैकां शिलायाः हृदयं च यत्।
अमनस्कं महाबाहो! तन्मयो भव सर्वदा॥

हिन्दी

शिला की भाँति, अर्थात् नैसर्गिक, गुणरूप, जड़ता को ग्रहण न किए हुए, अर्थात् अपने को शिला की तरह निश्चेष्ट प्रदर्शित करते हुए भी, परन्तु आन्तरिक व्यापार से निवृत्त न होता हुआ, हे महाबाहु! अपने मन से संकल्पों को निकाल कर अर्थात् निर्विकल्प होकर, सदा तन्मय हो जाओ।

कन्नड़ी

कनिहेंज्ञ ज्ञाती जड़ता न हेरिस अर्थात् स्वभाव किन्य कनिहृदय दोंम बेहरकत हुज़्ज़य ति, मत्त मनसि मनुकि व्यवहार-निधि पथ न अरिय, हे राम!, चु मन निर्विकल्प व्यक्ति कर आत्म-मन्थन अर्थात् आधि [illegible]

Having taken out all that inertia from within your self, which is not less than the dullness of a stone, you, o mighty armed one, be unmindful of the outer world and behave alertedly or finally absorbed in the fundamental unity.

२३) नित्यानन्दः चिदाकाशस्वरूपः परमेश्वरः।
घृद्-भाजनेषु घृद् इव, सर्वत्राऽस्ति पृथक् स्थितः॥

हिन्दी

परमेश्वर परब्रह्म सदा आनन्दस्वरूप है। वह चिदाकाशरूप है। वह सर्वत्र व्याप्त होकर भी एक दीखता है जैसे नामरूपमय सृष्टि से कोई पृथक् वस्तु है, जैसे मिट्टी नानाप्रकार बर्तनों में अलग अलग दीखती हुई भी, नाना नामरूपों से अप्रभावित होकर एक ही मिट्टी है।

कन्नड़ी

परमेश्वर शु शाश्वत-आनन्द-मय, व्याप्ति शु चिदाकाश हु सर्वगत; विश्व पांच भूत-कानन मंज़ हि मय'च अकाय/आंतरिक्ष ने सार्वत्रिय कानन मंज़ व्यापक, आगलि अलग अलग कानन मंज़ हि हुट्ट अलग ति बोज़ने यिवान।

Parameshwara is ever joyful and omnipresent, like life (चित्) and space (आकाश). Although apparently existing separately he is omnipresent, like space in the various vessels of different shapes.

(13)

The Atman, having inseparably united itself with the Ocean of consciousness, blooms forth, during this sweet will, in this vast Universe, wherein seem to rise manifold Experiences in the form of Ebbing & rising waves, dashing and dancing around us.

(संहार)

13) अपारसंवित्-सलिल-वलनैः ।
चित्-एकार्णव एषोऽयं स्वयं आत्मा विजृंभते ॥

हिन्दी

इस अनन्त संहार की अनुभूति के जल तरंगों के उत्तम चक्र को नानारूपों में प्रदर्शन का मञ्च दिलाती हुई, चैतन्य-समुद्र ही एकीभूत, यह आत्मा, (संसार में) स्वयं भिन्न भिन्न नामरूपों में उल्लसित हो रही है ।

संस्कृत

अथ अनन्त संसारचित्त अनुभूति हेतुक/जल तरंगायित उत्तम चक्रवत्, नानाप्रकार, प्रदर्शनार्थक मञ्च दिव, चैतन्य-समुद्र सूत्र कृत्य वनोद्भूत, चानन्य, शुद्ध, अद्वैत आत्मा, अन्दर ही अन्दर, स्वयं २ नाम-रूप धारित, उल्लासित मंच अथ. चहुं ओर चमत्कार ।

* The Atman,- having united itself with / the ocean of Consciousness, blooms forth, of its own accord, in the stage of this unlimited expanse of Universe consciousness, where in seem to take shape manifold appearances in the form of shining & flowing waves objects of various forms & names.

१८) भरितावेश-दिक्-कुंजं अनन्ताकाशनिर्मलम् ।
इदं वस्तु जगत् सर्वं चिन्मात्रं वारिवाऽम्बुधिः ॥

हिन्दी

जैसे समुद्र जल के सिवाय और कुछ नहीं होती नदी, यह सारा जगत् उस चिन्मात्र के सिवा और कुछ नहीं। जो यह चिन्मात्र है, यह घरों दिशाएं व्याप्त होकर, अनन्तहीन आकाश भी समाया हुआ है।

कश्मीरी

भिर्य-कांठम/ज़ल- समुद्र और वयहि केंह छुनु, तिथय कांठय यि ज़गत् ति नथ चिन्मात्रह् अमेर वयहि केंह छुनु। युह चिन्मात्र सर्वत्र छु अर्थात् यंत्र यंत्र दिशायि व्यापि ~~वर्ते~~ ~~यह, वयहि छुन~~ आकाश ति व्योमभुत छुन।

As this ocean is nothing but water alone, so this world is nothing but Chit alone, which, besides filling the whole host of quarters, and pervades the infinite sky.

९५) निरंशत्वात् विभुत्वात् च, नभसः नश्वरत्वतः ।
ब्रह्म-व्योम्नोः न भेदोऽस्ति चैतन्यं ब्रह्मणोऽधिकम् ॥

हिन्दी

पूर्ण ~~होने के कारण~~, और व्यापक होने के कारण, एवं अक्षर होने के कारण, 'ब्रह्म' और 'व्योमन्' के मध्य, कोई वियोज्य भिन्नता मालूम नहीं होती है; हां, 'ब्रह्म' में केवल 'चैतन्य' की अधिकता है ।

कन्नड़ी

पूर्ण, व्यापक नु अक्षर आहनु किन्न, ब्रह्मद नु व्योमद (आकाश-शून्य-एं) मंज़ इन कोंद भिन्नता, भिन्न रद विशिष्ट समान, लेकिन ब्रह्मद मंज़ दे अधिकता केवल चैतन्यच ।

No difference seems to exist between Brahmam & Vyoman, as both are, whole, full, partless, pervasive and eternal. But Brahman exceeds व्योमन् ~~only~~, in as much as, it ~~has~~ Embodies चैतन्यं (life) or consciousness, in itself.

१६) निष्कलंकोऽति गंभीरः सान्द्रानन्दसुधार्णवः ।
माधुर्यैक रसाधार एक एवास्ति सर्वतः ॥

हिन्दी

इस तरफ, जहां देखो आत्मा ही आत्मा नज़र आएगी। यह वह अमृत-समुद्र है जो पूर्ण आनन्द से भरा हुआ है। जिस में तरंगें नहीं उठती और जो बहुत गहरा है तथा मीठा रस जिस में भरा पड़ा है।

ગુજરાતી

ચોતરફ, જ્યાં જોવ નજર ત્યાં, ફક્ત બ્રહ્મરૂપ આત્મા જ દેખાય છે - કે જે અમૃત-સમુદ્ર છે પૂર્ણ આનંદ-સભર જે ભરેલ છે, જ્યાં મોજાં જેવાં ચંચલ તત્વો નથી, કે જે ઘટ્ટ અને મધુર રસ ભરેલ છે। (સમુદ્ર)

There exists one Atman alone, ~~He~~ who is the milky ocean of solid joy, unagitated by waves and unfathomable. He is the only receptacle of sweet juice.

१७) सर्वं खल्विदं ब्रह्म, सर्वमात्मेदमाततम् ।
अहं अन्यः इदं अन्यत् इत्यखण्डं न खण्डय ॥

हिन्दी

निश्चयरूप से यह सारा विश्व ब्रह्मरूप है । यह दृश्यमान जगत्-प्रपंच उसी का विस्तार-फैलाव है । मैं एक पृथक् वस्तु हूं और यह दृश्य जगत् भी एक अलग वस्तु है — इस प्रकार की गलत दृष्टि से इस अखण्ड को खण्डित न करो ।

कन्नड ।

ಇ ಕೋಸರ ಹು ಬ್ರಹ್ಮರೂಪ, ಅಥ ಸಂಪೂರ್ಣ ದೃಶ್ಯ-ಪ್ರಪಂಚದ ಮಂಜ ಹು ಕೇವಲ ತನ್ನಿಮಿತ್ತ ಬ್ರಹ್ಮರೂಪ ಆತ್ಮಾ-ಪುರುಷ ಕಹಲಾವ । ಅದ ಹುಸ ಅಲಗ ಕುಲಾಸ ಚೀಜ಼ಾ ನು ಇ ಜ಼ಗತ್ ನಿ ಹು ಕುಲಾಸ ಅಲಗ ಚೀಜ಼ಾ — ಅನಿ ಪ್ರಕಾರಚಿ ಮಿಥ್ಯಾದೃಷ್ಟಿ-ಇನಿ ವಿಚಾರ ಕಿನ್ಮ ಪ್ರಮಾವಿತ ಹಕದಿಥ, ಅಸ ಅಖಂಡಹ (ಪೂರ್ಣಬ್ರಹ್ಮಸ) ಸತ್ತು ಕರತ್ ಖಂಡಿಜ಼ಿ-ಖಂಡಿಥ ।

This all is verily Brahman or Atman, Expanded all around. Do not partition Him who is partless, full and compact, under this false notion, that He and the world are distinct & seperate.

९८) यदेव ब्रह्मलोकस्थं तत् बुद्ध्वं अखण्डितम्।
ज्ञात्वा तत्, तीर्त्वा संसारः परमेश्वरतां गतः॥

हिन्दी

यह केवल
सब जगह फैला हुआ, ज्ञानमय तथा परिपूर्ण जो ही
ब्रह्म का स्वरूप है, उसीको जान कर, तुम संसार को
पार करोगे और ब्रह्मस्वरूप परमेश्वरता को प्राप्त करोगे।

कश्मीरी

सर्वगत तु ज्ञानमय व्यापि परिपूर्ण (सर्वंऽरनु ऋस्त)
मुनुय यि ब्रह्म-बुन्द स्वरूप छु, सुंदय ज्ञानिय,
नरस्व, च्यु, यथ संसार- सागरस, व्यापि बनस्व परमै-
श्वरस सूत्य तच्छुय।

(One with परमेश्वर), You will really feel united with the Supreme Lord, and ~~above~~ cross this ocean of world, after having realised the ~~essence of~~ Brahman or Ātman, who is all pervasive, of the nature of ज्ञान (knowledge) and whole (pastless & full).

१५) सर्वं खल्विदं ब्रह्मेति मन्वीत ब्रह्म वै पुमान्।
पीतेऽमृतेऽमृतमयः को नाम न भविष्यति ॥

हिन्दी

यह सब जगत्-प्रपंच सिवाय ब्रह्म के और कुछ नहीं है, इस प्रकार की पूर्ण भावना धारण करते हुए, तुम भी, यह निश्चयरूप से जान लो कि तुम भी ब्रह्मरूप होगए हो। अमृत पीकर कौन अमर नहीं होगा? ।

कश्मीरी ।

यि होकय ज़गत्-प्रपंच, सिवा ब्रह्म, छुनु व्यय केंद्रति — अमि प्रकारुच पूर्ण भावना मनस मंज़ धारण कॅरिथ, चू ज़ान, ज़ि चुति बन्योरव ब्रह्म-स्वरूप्य। अमृत-पान कॅरिथ, चू वनतु, कुस हना वनि नु अमर?।

Any one, when, his fully convinced of the fact that all this is nothing save Brahman, would soon attain ब्रह्मत्व, i.e. become one with Brahman. who will not become immortal, after having drunk अमृतं? (water of immortality).

20) अस्त्यभिमानो मोक्षेऽपि, देहेऽपि ममता तथा।
न स योगी न स ज्ञानी, केवलं दुःखभाक् अहो॥

हिंदी

जिस व्यक्ति में मुक्ति प्राप्त करने का अभिमान है, लेकिन देह पर भी ममता धारण करता है, वह न योगी है और न ज्ञानी है, वह केवल दुःख का ही सामना करेगा।

कन्नडी

ಯಾವನಿಗೆ ಮುಕ್ತಿ ಪ್ರಾಪ್ತ ಮಾಡುವ ಅಭಿಮಾನ ಇರುತ್ತದೆಯೋ, ಮತ್ತು ಶರೀರದಲ್ಲಿಯೂ ಮಮತೆಯಿರುತ್ತದೆಯೋ ಅವನು ಜ್ಞಾನಿಯೂ ಅಲ್ಲ, ಯೋಗಿಯೂ ಅಲ್ಲ, ಅವನು ಕೇವಲ ದುಃಖದ ಕಡೆಗೆ ಮಾತ್ರ ಹೆಜ್ಜೆ ಹಾಕುತ್ತಾನೆ।

A person, who is conscious of his ability to attain Salvation and yet does not detach himself from the bodily pleasures, is neither a yogi nor a Jñāni, he is only stepping towards the path of misery and destruction, which cause pain to him.

२१) मय्येवाऽस्तु चेत् तव् श्रद्धात्मन् सर्वं अनेनोपि निश्चयात्।
नोचेत् बहु अपि इदं प्रोक्तं त्वयि भस्मनि हूयते ॥

हिन्दी

यदि तुम मंत्रतंत्रकारी हो, तो, इतने से ही, तुम्हें सब कुछ प्राप्त होगा। केवल निश्चय, विश्वास और श्रद्धा दिल में जमा करते रहो। नहीं तो, इस से अधिक भी यदि तुम्हें बताया जाए, तो वह सब ऐसा निरर्थ होगा जैसे भस्म में दी हुई आहुति व्यर्थ होती।

कन्नडी।

अय्य नु सुकात्र अनुभव, दृढवि ईवे मंत्र विश्वास नु श्रद्धा अनि, नमगि गळिसुव साधिसुव कामनेगि कूडि। केवल ईवु ईवे निश्चयपूर्वक मत्त करुतिरु। बरुव कोंडा ईवे तुंबिसु बुनिसिरोत्तु ति ज्यादु वलय (लेकिन अय्य ईवे मंत्र श्रद्धा नु निश्चय अनि नु) सुरि मत्त ईवे क्रैंजलि पोन्य हारुवंथ आगुवर।

If you have an unshakeable faith in our instruction, you will attain, all, you desire, because of your firm conviction. Otherwise, Even much preaching, will be of no avail to you. Just like an offering thrown into a mass of ashes.

22) अपि विज्ञाततत्त्वेन त्वयाऽभ्यस्यं इदं सदा।
न नाममात्रात् कतक-फलं अम्बु प्रसादकम् ॥

हिन्दी

ब्रह्म तत्त्व जानने के पश्चात् भी, तुम्हें इस पर मनन करने का अभ्यास जारी रखना चाहिए। कतक फल के केवल नामोच्चारण करने से ही, जल का मैल दूर नहीं होगा, (जब तक न इस को पानी में डाला जाए और उबाला जाए)।

कश्मीरी

ब्रह्मतत्त्व ज'निथ ति, छेह पज़ी मथ च्यठ पज़ुन मनन करनुक अभ्यास जारी अवुन। मतलब, युथ न अर्जित कुरुत आत्मज्ञान अनभ्यास किन्य न'छ्यठ गछी। कतक-फल-कि केवल नाव हुनु हूती, छुनु पोन्य साफ सपदान ब्रह्मन नु हु ज'निह मंज़ त्रावेन तु थ्रकनावेन।

Even after having realised the fundamental principle, you should not refrain from pondering over it or continue the same practice for long. For, mere uttering the name of a clearing plant कतक, will not clear away the impurity of water, unless it is thrown into it and boiled in it (water).

23) अहं एव परं ब्रह्म वासुदेवाख्यं अव्ययम् ।
इति ह्यात् निश्चयो मुक्तौ, बन्ध एवाऽन्यथा भवेत् ॥

हिन्दी

मैं ही परंब्रह्म हूं, जिसको वासुदेव के अन्य नाम से भी जाना जाता है, जो सदा अव्यय, सनातन तथा अनश्वर है। यही निश्चित ज्ञान मुक्तिप्रद है। नहीं तो, अर्थात् यदि ऐसा दृढ़ संकल्प तुम्हारे मन में न हो, तो समझ लो, बन्धनों से छुटकारा नहीं होगा।

कन्नौजी

बंय खुस परंब्रह्म, ब्यइ हि वासुदेव ति जनान, खुस अव्यय, सनातन तु अनश्वर छु। अभी निश्चयि-हूत्य अकलत्व, नतु छुख संसारह मंज़ कांहिथ ॥

"I am The Param Brahma, (Supreme Lord), known also by the name of imperishible Väsudeva," — this unshakeable resolve alone will cause your final liberation, otherwise, bondage will persist.

24) नेति नेतीति नेतीति प्रोक्तिं यत् परं पदम् ।
निराकर्तुं अशक्यत्वात्- तत् ब्रह्मेति श्रुतौ भव ॥

हिन्दी

यह मैं नहीं हूं- यह भी मैं नहीं हूं- और यह भी मैं नहीं हूं- इस प्रकार का तर्कपूर्ण विचार करते हुए, जब तुम, शेष बचे रहे, उस अन्तिम वस्तु पर पहुँच जाओगे, जिसे तुम 'नेति' कह कर नहीं टाल सकोगे, वही वस्तु तुम हो जो ब्रह्म या आत्मा से पृथक् नहीं। यह समझ कर ध्यान होकर सुखी हो।

कश्मीरी

नेति छुह न वदु - नेति छुह न वदु - नेति छुह न वदु - मिथ-पांठम तर्क करान करान, यति चु अंतर तथ कुनि चीज़ह यमठ बातान सहितथ ठहरव, यथ चु नि हुकरव न व'निथ कि थि छुह नु वदु, तुम छुरन चु पुह ब्रह्मह या आत्माह निशि अलग छुय। वादु समझ थि कथ, यदु बनाव ध्यान तु सुखी।

I am neither this, nor this, nor this — with this process of reasoning, you will naturally arrive at some final pad (stage), the existence of which, it will be impossible for you to deny; that pad is your own self of the nature of Brahm or Atman with which you are inseparably united. Believe in this and be happy.

श्रु) अधीष्व शास्त्रं वा नाम, नानाशास्त्राण्यनेकशः ।
तथापि न तव स्वास्थ्यं सर्वविस्मरणात् ऋते ॥

हिंदी ।

हे प्यारे ! विविध प्रकार के अध्यात्म शास्त्रों का अध्ययन करो, अथवा उन पर कथा गोष्ठी भी करो, अथवा उनका कथाश्रवण आदि भी सुनते रहो, तो भी तुम्हें स्वास्थ्य अर्थात् 'स्वरूपस्थिति' की अवस्था प्राप्त नहीं होगी, जब तक न तुम, सिर्फ इतना करो, सब कुछ भूल नहीं जाओ ।

कन्नडी

हे दाढि ! हेगिरिगि नीनु भिन्न शास्त्रगळन्नु वाचन, अथवा कथाश्रवण नि माडु निजवे, अथवा निमगे इष्ट बन्दु शास्त्रगळ गोष्ठी नि, तोचि बन्नु नीनु 'स्वास्थ्य' अर्थात् 'स्वस्वरूपस्थिति' हेंब अवस्थे, स्वतंत्र नागि सोऽहंभाव शून्यवाद प्रपंच नेनपागदवरेगू ।

Even though you may preach, or listen to the instructions set forth in various scriptures, yet you will feel groping in the dark for words of peace, unless & until you lose consciousness of all around you.

२६) आत्मानं सततं ब्रह्म विद्धि चैकं निरन्तरम् ।
अहं ध्याता परं ध्येयं, अखंड खण्डयते कथम् ॥

हिन्दी

अपने आप को सदा, शिव ब्रह्म के, और कुछ नहीं जानने का अभ्यास करते रहो। अपने आप को ध्याता का दर्जा देना गलती है। इसी प्रकार ब्रह्म को ध्येय समझ कर मानना भी गलती है। एक ही रूप में अवस्थित इन दोनों को खण्डित कैसे किया जा सकता है?

कश्मीरी

पनुन पान जानुन ब्रह्मरूप; अमी ज्ञान्य हुन्द नहि चोन सदा अभ्यास करन; पनुन पान ध्याता मानुन छि गलती अथवा 'ब्रह्म' ध्येय मानुन ति छि गलती। अंकितुय अखंडरूपस मंज़ खंडित्य मानवुनियन छिमन हुन, (ध्यातृ ध्येयस, कथ-कांठय छिन खण्ड्न खांठय ?

Know thyself as One alone united inseparably with Brahman. Your notion, that you are the Experiencer & the Brahmam the object of experience, cannot hold good or reasonable, simply because of the fact that the Partless Brahman cannot be subjected to partition i.e. partitioned into ध्याता & ध्येय.

३७) सोऽहं चिन्मात्र एवेति, चिन्तनं ध्यानं उच्यते ।
ध्यानस्याऽविस्मृतिः सम्यक् समाधिः अभिधीयते ॥

हिन्दी

मैं केवल चैतन्य-मात्र हूं — इसी चिन्तन को 'ध्यान' की संज्ञा से जाना जाता है । जो ध्यान की अविस्मृति है, अर्थात् ध्यान को न भूलना — उसको अभ्यास सदा जारी रखना, उसी को 'समाधि' के नाम से पुकारते हैं ।

कश्मीरी

मुहं मि अहं शुद्ध, हुवहं शुद्ध नु 'चित्-मात्र' चिक्य यिथि न केंहति । मुहं मंज प्रकारुं चिन्तन करुन छु, तथ छिवनान 'ध्यान' । मुहं मि 'ध्यान' न मंझरावुन छु अर्थात् तंमुक अभ्यास जारी थवुन छु, तथ छिवनान 'समाधि' ॥

The constant meditation of the formula — 'I am चित् and 'चित्' alone, is called Dhyānam. An uninterrupted cultivation of ध्यान (dissolution in the Brahman), is called समाधि ।

२८) ब्रह्माकार-मनोवृत्ति-प्रवाहोऽहंकृतिं विना।
सैंप्रज्ञात समाधिः स्यात् ज्ञानाभ्यास प्रकर्षितः॥

हिन्दी

अहंता को त्याग कर, अपनी मनोवृत्तियों के संतत प्रवाह को केवल ब्रह्मरूप सदा समझते रहना — यह जो भाव है, उस को संप्रज्ञात समाधि के नाम से जाना जाता है। (समाधि) यह/आत्मज्ञान के अविरत अभ्यास से धीरे धीरे श्रेष्ठता की ओर बढ़ती रहती है।

कश्मीरी

अहंता त्रोविथ, ~~कुह~~ पनन्यन. मनोवृत्तियन हंदि प्रवाहस सदा ब्रह्मरूप मानुक, मुस भाव छु, त'यस छि नाम "संप्रज्ञात-समाधि", यस आत्म-ज्ञानहि अभ्यास-सूत्य यह वारु वारु यदान तु वुनचार लभान।

The flowing stream of mental tendencies, an idea of Brahman alone predominating ~~therein~~, to the exclusion of Ahantā, is a peculiar state of mind, known as संप्रज्ञात-समाधि, which grows into magnitude with the daily practice of spiritual knowledge.

(२४) कल्पान्तकालवो वान्तु मान्तु वैकल्प अर्णवाः।
तपन्तु द्वादशादित्याः नास्ति निर्मलतः क्षतिः॥

हिन्दी।

कल्पान्त की वायु बह जाए, सारे समन्दर/एक हो मिलकर जाएं
~~मिल जाएं~~; बारह सूर्य/एक ही समय, उदित होकर तप जाएं, परन्तु
कालसूत ज्ञानी को कोई हानि नहीं हो सकती है।

कन्नड़ी

कल्पान्तकाल गाळि बीसलट्टु, हन्नेरडु समुद्र एकवट्टु
मीरलट्टु, बारु-हन्नेरडु सूर्यरु एकीकालदि तापलट्टु, आग
कालसूत ज्ञानिगे, एनूबुद्धिस्तरिगे, ज्ञानी पुरुषरिगे, एकंदि
गू कोंचवू तिळुकुवुदिल्ल।

No harm whatsoever, will befall a spiritually advanced person, who has become One with Brahman, even if the doomsday storms would blow, or all the oceans mingle together or the twelve suns shine in the sky simultaneously.

२०) या चितिः सर्वभूतानां उदय-व्यय-साक्षिणी।
तां चितिं पश्य कायस्थां पूर्णानन्दघनामृताम् ॥

हिन्दी

जो चैतन्यदेव, सारे विश्व के संहार और सृष्टि को, साक्षी के रूप में अवस्थित होकर देखता रहता है, उस को, जान लो, कि वही तुम्हारे शरीर में भी वास करता है। वह पूर्ण, आनन्दघन तथा अमृतमय है।

कश्मीरी

युस चैतन्यदेव, सारी संहारुक उदय तु नाश, अय साक्षी बॉनिय छुख्यान छु, तु ज़ानुन, ज़ि तुय छु यथ चॉनिह शरीरस मंज़ निवास करनः तु छु पूर्ण, आनन्दघन तु अमृतमय।

That consciousness, which is the sole witness of the creation & the dissolution of the universe, rests within you also. It is of the nature of 'full', solid bliss & the joy of immortality.

39) मनोदृश्यमिदं सर्वं यत् किंचित् सचराचरम्।
मनसो ह्युन्मनीभावात् द्वैतं नैवोपलभ्यते ॥

हिन्दी

यह जो कुछ हमें जड़जङ्गमरूप विश्व हमारे सामने, ब्रह्म से अभिन्न होते हुए भी, द्वैतरूप से प्रकाशमान है, उसे, हम, मन के द्वारा ही, ऐसा देख सकते हैं। परन्तु मन को ब्रह्मोन्मुख बनाए जाने पर, द्वैत-भावना नहीं रहेगी।

कन्नडी

यि कंडा यि चराचर विश्व मु, तु क्षिन, अंत्य मनु तूली बुद्धान, ज्ञानान तु समर्थान। ब्रह्म सन्निधि सूत्य अद्वैत-रूप आंशिय ति, बुधि ज्ञात, दे, अदि ब्रह्म-भिन्न भावन। अम्मुक कारण मु मन। यदोय यदि ब्रह्मोन्मुख बनावनु मी, न्यदि मु नु ब्रह्मनु विश्वद मेज़ कौंद ति भावना द्वैतव दोज़ान।

It is the mind alone that helps us to understand, this world consisting of moveable and unmoveable creation, as one, quite different from the nature of Brahmam. The same, when turned towards the Brahmam, ceases as our pride, to dispel this dualistic notion, resting within us.

dispel

३२) अत्र अस्पन्दे शिवे पूर्णे, अस्यान्तर् जगतः स्थितिः।
स्पन्दाऽस्पन्द-विलासाऽऽत्मा, स एकोऽत्र चिदाकृतिः॥

हिन्दी

जो अटल, स्थिर, मंगलरूप और पूर्ण है, जिस के गर्भ में जगत् बीजरूप से अवस्थित है। जड और चेतन रूप में विकसित होना जिस का स्वभाव है। वही एक चिदाकार ब्रह्म सर्वत्र विराजमान है।

कश्मीरी।

युस अटल तु स्थिर छु; मंगलरूप तु पूर्ण छु; यंय-सेंदित उदरस मंज़ि जि जगत् छु बीज़रूपवत् स्तिथ; जड-रूपस तु चेतनरूपस मंज़ि, विस्तीर्ण स्वदुन, यंय्यनुद स्वभाव छु; सुय अस्व चिदाकार ब्रह्म छु, यति, सारिनुय जायन मंज़ि, प्रकाशमान स्तिथ।

There is one Brahmen alone of the form of Consciousness, who shines in the fourth encompasses. He is unagitated and firm. He is peaceful in the nature of auspiciousness; within whom rests the world in the form of seed; whose nature is to spread out in animate & in-animate creation.

३३) अहिर्निर्ल्वयनीं अहिः आत्मतया,
जग्दृहे परिमोक्षणतस्तु पुरा।
परिमुच्य नु तां उरगः बिले,
न निरीक्षत आत्मतया नु पुनः॥

हिंदी

अपने कञ्चुक को त्यागने से पूर्व, सांप, उसे अपने शरीर से एकरूप समझता रहा था। जब कञ्चुक को त्याग दिया, तो, अपने बिल में, उसे देख कर, उस पर, फिर, उसको कोई आत्मीयता की दृष्टि न रही।

कश्मीरी।

ज़ुंह त्रावनु छोंड, ओस हकक तय ज़ानान पनुन नु यानस सून्य कुनुय; यसि तय्य नु कुंह त्रोव, त पतु उज़न सु, वाज़ि मंज़, हेर कुन, पथर प्योमुत, क्या पतु देज़ंया तय्मिस, अय त्रठ, कोंह समलयि ह'न्ज़, कोंह नज़र?

Previous to its casting away, the snake believed his slough as an inseparable part of himself. But after having cast it away in his hole, did he ever come to look at it, nothing to say of his owning it as a part of his body, as he did previously?

* nor is he prompted to do a deed, ordained by the scriptures for getting merit from it. His knowledge of virtue & vice is ~~not so limited~~ as limited ~~than~~ as that of a child.

३४) दोषबुद्ध्योभयातीतो निषेधान्न निवर्तते।
पुण्यबुद्ध्या तु विहितं न करोति यथाऽभीकः॥

हिन्दी

पाप-पुण्य की दोष उभयातीत
अनजानता से अपर उठा हुआ, एक ~~निषिद्धातीत~~
आत्मज्ञानी, किसी निषिद्ध कर्म के करने से, इसलिए पीछे
नहीं हटता, कि उसे इस के करने में दोष है; अथवा
शास्त्र संमत कर्म केवल करने में इसलिए प्रवृत्त होता है
कि इस के करने में पुण्य है, वह एक निर्दोष बालक की
तरह दोनों कार्य करता है।

कश्मीरी

पाप-पुण्यच अज्ञान-चिन्ता त्रावि'वअ, पुरु उभयातीत
आत्मज्ञानी आसान छु, कुनि निषिद्ध-कर्मुक करनु निषिद्ध छुनु
हुट, अमि किन्य, पुरु हयकान, ज़ि अमिकिन्य लाजिम दोष,
या शास्त्र-संमत कर्मुह करनु छु, अमि किन्य, प्रवृत्त हपदान,
ज़ि, अमि सूत्य लाजिम पुण्य; यन-दोयुक स्थान छु तंमिह
स्थुपुय आसान, पुरु कोंहि शुरिह आसान छु।

Unmindful of the effects of virtue & vice, a self-
person, does not desist from doing a prohibi-
tive action for fear of bringing pollution to him;

(३५) अनुत्कीर्णा यथा स्तम्भे संस्थिता सालभंजिका।
तथा ऽतं जगत् कल्पे तेन शून्यं न तत् पदम्॥

हिन्दी

जिस प्रकार एक स्तंभ पर अंकित होने से पूर्व भी, एक पुतली (सालभंजिका) के चित्र की रूपरेखा चित्रकार के मन में मौजूद होती है, उसी प्रकार यह जगत् भी, उस ब्रह्म में, अभिभूत होने से पूर्व बीजरूप में विद्यमान है। ब्रह्म पद उस जगत्-बीज से खाली नहीं रह सकता।

कश्मीरी

यिथ-पांठय अंकित थमस स्थठ, चित्रित रूपदुनु क्रांठहि, अस्व क्वतुज छि, अर्थात् अकि क्वतुजि-हंज़ रूपरेखा (नक्शि) छि, चित्रकार-हंदिस मनस मंज़ मूजूद्य अस्तान, तिथय-पांठय, छु, थमि ज़गतुक नक्शि ति, उत्पन्न रूपदनु क्रांठय, बीज़रूपदिन्य, ब्रह्म-पदस मंज़ मूजूद अस्तान; ब्रह्मपद हकिनु, ज़ॉंह ति, ज़गत्-बीज़ बग़ैर, (खाली) रत्ज़ाय।

As prior to its being carved on a pillar, the outline of a picture doll, is, there already in the mind of an artist-carver, so, is, the picture of the world, before its manifestation, resting in Brahman. Brahman's sphere, cannot remain, without the seed of world.

* which lies in Brahman, in manifested and unmanifested form. The sphere of Brahman cannot subsist without the seed of world.

9.8.74

THE END.

25.12.73.

२६) सौम्याम्भसि यथा वीचि र्नैवास्ति न च नास्ति च।
तथा भातं जगत् ब्रह्म तेन शून्यं न नान्यदृश्॥

हिन्दी

शान्त-स्वच्छ जलराशि में, जिस प्रकार, तरंगों का अस्तित्व है और है भी नहीं। उसी प्रकार, शान्त ब्रह्म में, प्रकट और अप्रकट रूप से, जगत् का अस्तित्व है और है भी नहीं। ब्रह्म का प्रतिष्ठान जगत् से खाली नहीं रहता।

कश्मीरी

थिव-पाठन अंकिस शून्न तु निर्मल ज़लस मंज़, मलख छि मौजूद आसान तु छिति तु मौजूद आसान, तिथय पाठय छु थि ज़गत् ति शान्त ब्रह्मस मंज़ आसान, तु छुति तु आसान। ब्रह्मदृष्टि किन्य बुज़्यथ, थि ज़गत् छु अहि ब्रह्म-भिन्न आसान, लेकिन यति सूक्ष्मदृष्टि-किन्य बुज़्यान, त्यति छु तु थि ब्रह्म-रूप कोर केंह ति, थिय-पाठय, पानि निशि अलग, नज़रि मंज़ थिय, ति, मलख ज़ल-निशि अलग छिनु आसान।

Just as, there, on a calm + placid sheet of water, the ripples, do not seem to exist, (~~all~~ ~~they do exist there~~), so is the case with the world.

§§ 155 115 185

2. प प्रच्छ तं वृद्धमन्द हसितेन
भद्रे! कथं कृत्स्नमवैमि नक्षत्र
हरन्ती अवाङ्मुखी: सुरभी: दृष्टी:
~~अद्रे स्वयैव: हरभि:~~

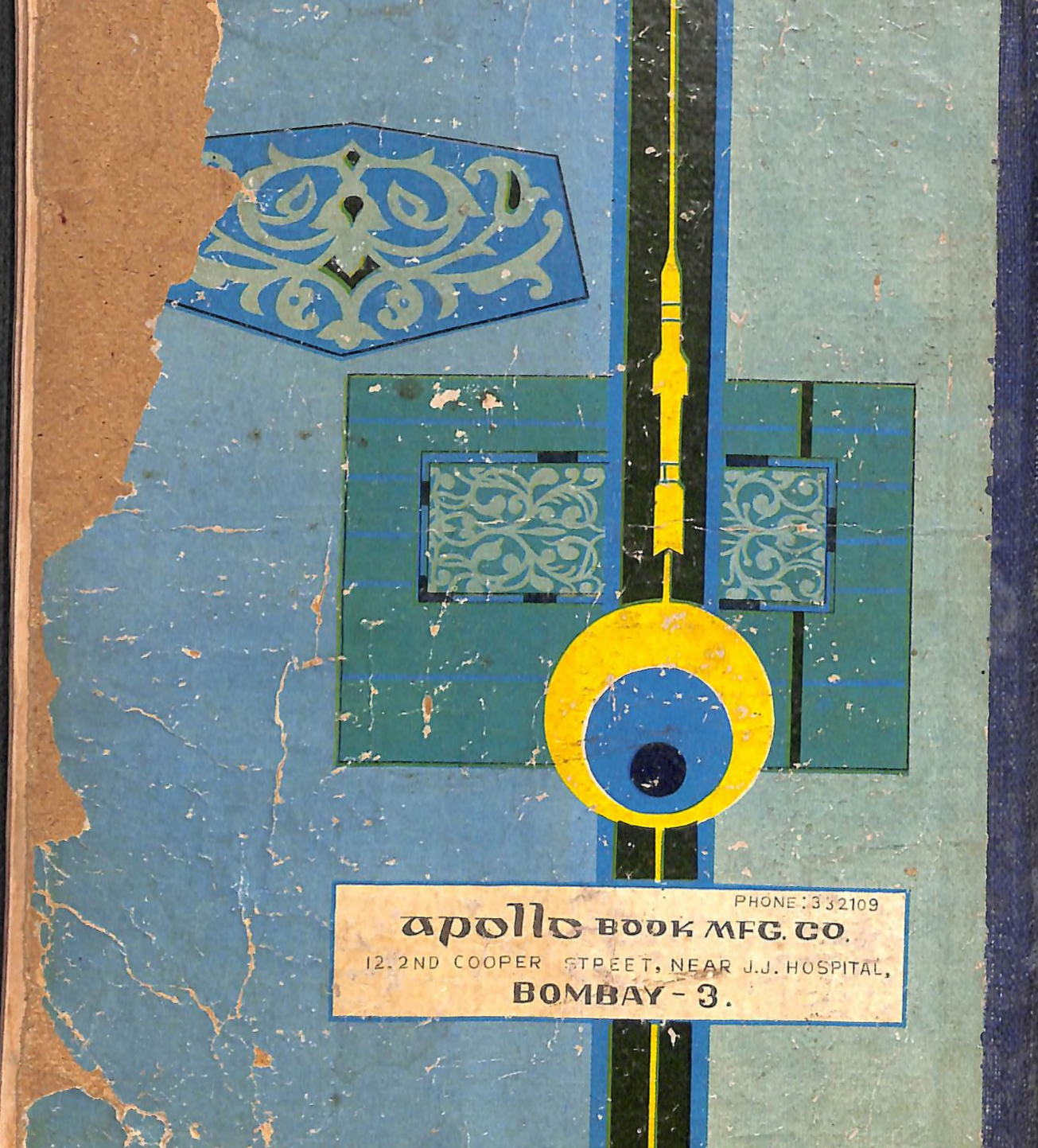

PHONE : 332109
apollo BOOK MFG. CO.
12, 2ND COOPER STREET, NEAR J.J. HOSPITAL,
BOMBAY - 3.